सम्पूर्ण पूजन रहस्यम भाषा टीका

सम्पूर्ण
पूजन रहस्यम्
भाषा टीका

लेखक : पं० शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"श्री गंगायैं नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री राधा कृष्णायनमः"

सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्

प्रातः स्मरण संध्यायुक्त

(गणेश पूजन से हवन, पूर्णाहुति, जपार्थ अनेक मंत्र एवं स्तोत्र से सुसज्जित)

ले० पं० शिवस्वरुप प्रसाद 'याज्ञिक'
भटवाड़ी, उत्तरकाशी

मूल्य 120 रु०

फोन-01334-225619

प्रकाशक
बी०एस० प्रमिन्दर
प्रकाशन दिल्ली-५१

मुख्य वितरक
कर्मसिंह अमर सिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार हरिद्वार

माननीय पाठक वृन्दः

कर्मकाण्ड का विषय अत्यन्त ही गहन है और इस गहन विषय को मथकर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। पूजन यज्ञ आदि करते समय कई पुस्तकों को देखे पढ़े बिना कोई पूजन यज्ञ कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था इसलिए सर्वोपकारार्थ मैंने सरल ढंग से आपके समक्ष इस पुस्तक को प्रस्तुत किया है।

इस पुस्तक को पास में रखनें से विद्यार्थियों को भी शायद अन्य ग्रन्थ की पूजनादि कार्य में आवश्यकता न पड़े क्योंकि नाना ग्रन्थों का सार रुप यह ग्रन्थ आपके पास है। ऐसी मेंरी आशा हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अपने समस्त सहयोगी विद्वानों का मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ एवं कर्मकाण्ड के जिन विद्वानों के ग्रन्थरत्नों के बल पर मुझ जैसे अल्पबुद्धि व्यक्ति में एसे गहन विषय पर अपनी लेखनी उठाकर इस पूजनादि पुस्तक को पूर्ण करने का प्रयास किया है उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक में यदि आपको कोई त्रुटि या सन्तुष्टी हो तो मुझे अपने विचार से अवगत करना न भूले।

अन्त में समस्त विद्वानों से पुनः प्रार्थी हूँ कि इस पुस्तक में जहाँ कहीं मुझसे मानव जन्य भूल या त्रुटियाँ हो उसको सुधारकर क्षमा करेंगे।

मकर संक्रान्ति
१५ जनवरी १९९५
भाष्कर प्रयाग।

सर्वविद्वज्जनानुरागी
पं०-शिवस्वरूप प्रसाद 'याज्ञिक'
भटवाड़ी टकनौर जिला उत्तरकाशी

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ सं०		पृष्ठ सं०
१. प्रातः स्मरणम्	७	२६. अधिदेवता पूजन	६०
२. सन्ध्या	६	२७. प्रत्यधि देवता पूजन	६०
३. पूजन प्रारम्भ	१६	२८. पञ्च लोकपाल पूजन	६१
४. गंगाध्यान	१७	२९. यज्ञ मण्डप निर्माण	६१
५. पञ्चगव्य सम्मेलन	१८	३०. स्तम्भ स्थापन	६२
६. आसन पूजन	२०	३१. दिग्पाल स्थापन	६३
७. घण्टा पूजन	२१	३२. वेद स्थापन	६४
८. शंख पूजन	२२	३३. कलश स्थापन	६४
९. धूप पूजन	२२	३४. वास्तु मण्डल पूजन	६५
१०. सूर्य पूजन	२२	३५. षोडश स्तम्भ पूजन	७६
११. दीप पूजन	२५	३६. दश दिग्पाल पूजन	८३
१२. ब्राह्मण पूजन	२६	३७. चतुर्द्वार पूजन	८७
१३. यजमान तिलककरण	२८	३८. महाध्वजा पूजन	८८
१४. शान्ति पाठ	२९	३९. चतुः षष्टि पूजन	९०
१५. चतुर्दश नमस्कार	३१	४०. क्षेत्रपाल पूजन	९२
१६. गणेश–गौरी पूजन	३१	४१. सरलदेव प्रतिष्ठा प्रयोग	९४
१७. संकल्प	३६	४१. विष्र्णोन्यास विधान	९९
१८. कलश पूजन	३९	४२. विष्णु पूजन	१००
१९. पुण्याहवाचन	४३	४३. शिव न्यास विधान	१०५
२०. ॐकार पूजन	५०	४४. शिव पूजन	१०६
२१. सप्त घृतमातृका पूजन	५१	४५. दुर्गा न्यास विधान	११०
२२. वसुधारा पूजन	५२	४६. दुर्गा पूजन	१११
२३. संक्षिप्त नान्दी श्राद्ध	५२	४७. सर्वतोभद्र देवता स्थापन	११६
२४. षोडश मातृका पूजन	५४	४८. लिंगतो भद्र देवता स्थापन	११८
२५. नवग्रह पूजन	५६	४९. एक लिंगतो भद्रदेवता स्थापन	१२१

	पृष्ठ सं०
५०. श्री यंत्रस्थ देवता स्थापन	१२२
५१. यज्ञकुण्ड पूजन	१२४
५२. अग्निस्थापन	१२६
५३. अग्नि पूजन	१५०
५४. हवन प्रारम्भ	१३१
५५. वारुणी हवन	१३२
५६. ग्रह हवन	१३३
५७. अधिदेवता हवन	१३४
५८. प्रत्यधि देवता हवन	१३५
५९. पंच्च लोकपाल देवता हवन	१३५
६०. दश दिग्पाल हवन	१३६
६१. वास्तु हवन	१३६
६२. षोडश स्तम्भ हवन	१३६
६३. चतुर्वेद हवन	१३७
६४. चतुः षष्टि योगिनी हवन	१३७
६५. लिंगतोभद्र देवता हवन	१३८
६६. श्री यंत्रस्थ देवता हवन	१३८
६७. क्षेत्रपाल हवन	१३८
६८. रुद्रकलश हवन	१३८
६९. पुरुष सूक्त हवन	१३९
७०. रुद्र सूक्त हवन	१४०
७१. श्री सूक्त हवन	१४२
७२. उत्तर पूजन	१४४
७३. अग्निपूजन	१४५
७४. बलिदान	१४६
७५. पूर्णाहूति होम	१४८

	पृष्ठ सं०
७६. दशाश तर्पण मार्जन	१४९
७७. गोदान	१५०
७८. आशीर्वाद मन्त्र	१५०
७९. जपार्थ ग्रह मंत्र	१५१
८०. महामृत्युञ्जय मंत्र	१५२
८१ संतान गोपाल मंत्र	१५२
८२. आरती	१५३
८३. आरती भगवान जगदीश्वर	१५४
८४. आरती ब्रह्मा विष्णु महेश	१५५
८५. आरती श्री अम्बे मैया	१५६
८६. पुष्पांजलि	१५७
८६. संकट नाशन गणेश स्तोत्र	१५९
८७. अच्युताष्टक	१६०
८८. विर्ष्णोअष्टविशतिनामस्तोत्र	१६१
८९. द्वादश ज्योतिलिंग	१६२
८९. विश्वनाथष्टकम्	१६२
९०. महालक्षयाष्टक	१६४
९१. दशहरा गंगा स्तुतिः	१६५
९२. श्री बद्रीनाथ स्तुति	१६८
९३. देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र	१६८
९४. नवनाग स्तोत्र	१७०
९५. नवग्रह स्तोत्र	१७१
९६. शनि स्तोत्र	१७२
९७. श्री राम स्तवन	१७३
९८. भाष्कर प्रयाग महात्म्य	१७३
९९. स्कन्द उवाच	१७४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"आशीर्वाद पत्रम्"

प्रियात्मन्

पं० शिवस्वरुप जी आपके द्वारा संकलित पूजन की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक "सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्" का मैंने अवलोकन किया। आपने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके विशेष परिश्रम से इस पुस्तक को वैदिक मंत्रों द्वारा सुसज्जित किया जिसके पठन-पाठन से हिन्दू जनता एवं पूजा प्रेमी विद्वानों को निःसन्देह विशेष लाभ हो सकेगा।

इस पुस्तक में पूजन को क्रमबद्ध रूप देकर आपने पुस्तक को पाण्डित्योपयोगी बनाया है "सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्" से पूर्व कोई भी क्रमबद्ध रूप में पूजन पुस्तक अप्राप्य थी जिससे यह पुस्तक पण्डितों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी, आपका यह भगीरथ प्रयास सराहनीय है।

मैं पुस्तक की सफलता के साथ-साथ आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

आपका शुभेच्छु

—ब्रह्मर्षि जगदीश प्रसाद नौटियाल शास्त्री

धर्म विशारद, साहित्य रत्न। भास्कर प्रयाग

सम्मति पत्र

भास्कर प्रयाग (भटवाड़ी) ग्राम वास्तव्यं पं० शिवस्वरुप 'याज्ञिक' द्वारा सम्पादिंत "सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्" नामक पुस्तक को आद्योपान्त देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कर्मभूमि भारत में कर्मकाण्ड ही ईश्वर से जुड़ने का धर्म मार्ग है, अतः बल, बुद्धि, विद्या, ज्ञान तथा श्री प्राप्ति के लिए कर्मकाण्ड ही एक मात्र साधन है।

इस पुस्तक की सहायता से विप्रवटु पौरोहित तथा यज्ञ अनुष्ठान कराने वाले आचार्यों को विशेष सुविधा होगी। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें पूजा होम प्रकरण प्रयन्त क्रमानुसार लिखा हुआ है। एकमात्र इसी पुस्तक से सम्पूर्ण यज्ञ सम्पादित किया जा सकता है।

वैदिक काल से पौराणिक काल पर्यन्त कर्मकाण्ड का ही महत्व रहा है तथा जब तक धरती पर गंगाजी रहेगी, तब तक सर्वत्र कर्मकाण्ड तथा यज्ञानुष्ठान होते रहेंगे। अतः सर्वजन हिताय यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

इत्योंम् शम्

परम रम्य गिखिर कैलासू वासी
डॉ० राधेश्याम साहित्य रत्न
एम०ए०डी० फिल्०।।

"शुभ सन्देश"

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध कथावक्ता पूज्य गोपाल 'मणि' महाराज का दिव्य सन्देश।

पं० शिवस्वरुप 'याज्ञिक' द्वारा सम्पादित 'सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्' सनातन धर्मावलम्बियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

श्रद्धा विश्वास से निरन्तर ब्रह्मकर्म में लगे हुए पृथिवी के देवता ब्राह्मणों को मेरा सादर अभिवादन।

सुप्रसिद्ध कथावक्ता
गोपाल 'मणि'

प्रातः स्मरणम्

शिवतनय वरिष्ठं सर्व मांगल्य मूर्ति।
परशु कमल हस्तं शोभितं मोदकेन।।
अरुण कुसुम माला व्याल यज्ञोपवीतं।
मम हृदय निवासं एक दन्तं नमामि।।

प्रातः स्व करतल अवलोकनम्–(प्रातः अपने हाथ देखने का मंत्र)

ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्दं प्रभाते कर दर्शनम्।।

ततः मुख शुध्यर्थें गण्डूषत्रयं कृत्वा नेत्रे प्रक्षाल्याचम्य स्व इष्ट देवतां नमस्कृत्य प्रातः स्मरणं कुर्यात्।

प्रातः स्मरामि भवभीति महार्तिशान्त्यै।
नारायणं गरुड़ वाहन मब्जनाभम्।।१।।
ग्राहभिभूत–वर–वारण–मुक्ति हेतुं।
चक्रायुधं तरुण–वारिज पत्र नेत्रम्।।२।।
प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथबन्धु।
सिन्दूरपूर्ण–परिशोभित–गण्डयुग्मम्।।३।।
उद्दण्ड–विघ्न–परिखंण्डनचण्डदंण्ड।
माखंण्डलादि–सुरनायकवृन्दवन्द्यम्।।४।।

ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारीर्भानुः शशी भुमीसुतोवुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।५।।

भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरंगिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्चगौतमः। रैभ्योः मरीचिच्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।६।।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोप्यासुरिपिंगलौश्च। सप्तस्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।७।।

वैन्यपृथुहैहय अर्जुनं च शाकुन्तलेयं भरतंनलं च। रामं च यौवेस्मरते प्रभातेतस्यार्थ लाभो विजयश्च हस्ते।।८।।

बलिर्बिभिषणोभिष्मः प्रहलादोनारदो ध्रुवः।
षडेते वैष्णवाः प्रोक्ताः स्मरणं पापनाशनम्।।६।।

अश्वत्थामावलिर्व्यासो हनुमानं च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीवनः।।१०।।

सप्तैतान्संस्मरतेनित्यंमार्कण्डेयं तथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतंसाग्रमपमृत्यु विवर्जितः।।११।।

अहिल्या द्रौपदीसीता तारा मंन्दोदरीस्तथा।
पंचकं नाम स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।।१२।।

कर्कोटकस्य नागस्य दमयंत्यानलस्य च।
ऋतुपर्णस्यराजर्षेः कीर्तनंकलिनाशनम्।।१३।।

धर्मोविवर्धयति युधिष्ठिर कीर्तनेन पापं प्रणस्यति वृकोदर कीर्तनेन। शत्रुर्विनश्यति धनञ्जय कीर्तनेन माद्री सुतौ कथयतां न भवन्तिरोगाः।।१४।।

पुण्यश्लोकोनलो राजा पुण्य श्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्य श्लोको च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।।

इत्यादि पौराण श्लोकान्पठित्वा। भूमिं प्रार्थयेत्–
(फिर भूमि की प्रार्थना करे)

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमंण्डिते।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शक्षमस्वमे।।

सन्ध्या

भूल से हुए पाप की निवृत्ति के लिए प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकाल दिन और रात्रि की सन्धि में जो कर्म किया जाता है उसका नाम सन्ध्या है प्रथम बाँयें हाथ में जल लेकर दक्षिण हाथ की अनामिका अंगुष्ठा से निम्न मंत्र पढ़कर शरीर शुद्धि के लिए जल छिड़के–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरःशुचिः।।

दाहिनें हाथ में जल लेकर सन्ध्या के लिए संकल्प करे–

ॐ तत्स दधेतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे जम्बूद्वीपे भरत खांण्डे आर्यावर्तान्तर्गत अमुक क्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुक पक्षे

अमुकतिथौ अमुक वत्सरे अमुक गोत्रोत्पनौऽमुकशर्म्माहं प्रातः (सायं) सन्ध्योपासन कर्म करिष्ये।

भूमि शुद्धि—पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः। विनियोग कर भूमि पूजन करें।

पूजनम्

पृथिवी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुनाधृता।
त्वंच धारय मां देवि पवित्रंकुरुचासनम्।।

शिखाबन्धनम्—गायत्री मंत्र को पढ़कर शिखाबन्धन करे पश्चात आचमन तीन बार करे।

विनियोग— अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भावभृतो देवता आचमनें विनियोगः।

ॐ ऋतंच सत्यंचाभीद्धा तपसोध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततो समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवदधि—संवत्सरो अजायत्। अहोरात्राणि विदधद्विश्व स्यमिषतो वशी। सूयोचन्द्रमसौ धातायथापूर्वमकल्पयत्। दिवंचान्तरिक्षमयो स्वः।

हाथ में जल लेकर गायत्री मंत्र पढे तथा रक्षार्थ अपने चारो तरफ जल छिड़के तथा प्राणायाम के चारों विनियोग के लिए चार बार जल पृथिवी पर छोड़े।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निदेवता शुक्लोवर्णः सर्व कर्मारंभ्भे विनियोगः। सत्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगोतमात्रिवशिष्ठ कश्यप ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुव्बृहती पडक्तित्रिष्टुव्जगत्यरश छन्दास्यग्नि वायादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोग। गायत्र्याश्विामित्र ऋषि गायत्री छन्दः सविता देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माअग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामें विनियोगः।

प्राणायामः मंत्रः—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐमह ॐजनः ॐतपः ॐसत्यं ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात्। ॐआपोज्येति रसोऽमृतं ब्रह्मभुर्भुवः स्वरोम्। इस मंत्र से अंगुष्ठ से नासिका के दक्षिणछिद्र को बन्द कर वाम छिद्र से स्वास लेता हुआ नाभि में विष्णु का ध्यान करे इसके बाद नासिका के दोनों छिद्र बन्द कर हृदय में ब्रह्मा का ध्यान करे पुनः नाक के दक्षिण छिद्र से श्वास का परित्याग करते मंन्त्रोच्चारण करते हुए भगवान शंकर का ध्यान ललाट में करे। इसी प्राणायाम को क्रमशः पूरक कुम्भक तथा रेचक कहते हैं।

प्रातःकाल आचमन का विनियोग पढ़कर पृथिवी पर जल छोड़े। सूर्यश्चमेति ब्रह्मऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अंपामुपस्पर्शने विनियोगः।

रात्रीकृत सव ज्ञाताज्ञात पापों के क्षयार्थ निम्न मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मनुपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्म्यांमुदरेण शिश्ना। रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किंचित् दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौं सूर्ये ज्येतिषि जुहोमि स्वाहा। निम्न विनियोग करे—आपोहिष्ठे—त्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषि गांयत्री छन्दः आपो देवता मार्जनें विनियोगः। निम्न मन्त्र से सात बार शरीर पर आठवें से भूमि नवें से पुनः मार्जन करे। (१) ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः (२) ॐतान ऊर्जेदधातनः (३) ॐमहेरणाय चक्षसे (४) ॐ योवः शिवतमों रसः (५) ॐतस्य भाजयते हनः (६) ॐ उशतीरिव मातरः (७) ॐ तस्मां अरंगमामवः (८) ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ (९) ॐ आपोजनयथा च नः विनियोगः—द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्रऋषिरनुष्टुप्छन्द आपोदेवता मार्जनें विनियोगः। हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र को तीन बार पढ़ते हुए जल शिर पर छिड़क

देवे। ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विनः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः सुन्धन्तुमैनसः। विनियोग पढ़कर जल छोड देवे। अघमर्षण सूक्तस्या अघमर्षण ऋषि अनुष्टुप्छन्दो भावबृत्तो देवता पाप निरसनें विनियोगः उपरोक्त मंत्र से– दाहिनें हाथ में जल लेकर उसको नासिका से लगाकर जल बायी ओर फेंक कर उसको न देखें।

ॐऋतंच सत्यंचाभीद्धातपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततो समुद्र अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि। सवत्सरो अजायत्। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यभिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ घाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवंच पृथिवींचान्तरिक्ष मथोस्वः। विनियोग–ॐ अन्तश्चरसीतिरश्चीन ऋषिअनुष्टुप्छन्दः आपोदेवता आपामुपस्पर्शनें विनियोगः। आचमन–ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपोज्योति रसोऽमृतम्। सूर्याघ्र्य– पूर्वाभिमुख होकर गायत्री मंत्र से तीन बार अर्ध्यदेवे। सूर्योपस्थान–विनियोग पढ़कर जल छोड़े। मन्त्र पढ़ते हुए प्रातः तथा सांय सन्ध्या के लिए दोनों हाथों की अंजली बनाकर उत्थान

करे। सन्ध्या के लिए हाथ ऊपर उठाकर उपस्थान करे। प्रथम विनियोग तथा मंत्र—उद्वयत्यमिति प्रस्कण्व ऋषि अनुष्टुष्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थानें विनियोगः।

मन्त्र—ॐ उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम्।।

द्वितीय विनियोग तथा मंत्र—उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषि गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

मन्त्र—ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। तृतीय विनियोग तथा मंत्र—ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

मन्त्र— ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आ प्राद्यावापृथ्वी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।। चतुर्थ विनियोग— तच्चक्षुरिति दध्यंङाथर्णव ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थापने विनियोगः।

मन्त्र—ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रुणुयाम शरदः शतंप्रव्रबाम शरदः शतमदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

अगंन्यास– ॐ ॐ हृदयायनमः। ॐ भूः शिरसेस्वाहा ॐ भुवः शिखायै वषट्। ॐ स्वः कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट्। गायत्री जप का विनियोग पढ़कर तीन बार जल छोडें।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णो जपे विनियोगः। त्रिव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्री उण्णिक् अनुष्टुप्छन्दास्याग्निवाग्वादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषि गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोग। गायत्री देवी के स्वरूप का ध्यान करें।

ॐ श्वेतवर्ण समुदिद्ष्टा कौशेय वसनातथा। श्वैतेर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता। आदित्य मंण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताथवा। अक्ष सूत्र धरा देवि पद्मासन गता शुभा।।

गायत्री आवाहन, मंत्र का विनियोग पढ़कर पृथ्वी में जल देवें।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रो देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

आवाहनम्– ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाघृष्टं देवयजनमसि ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोम्।

गायत्री मंत्र–ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।

उपरोक्त मंत्र से यथा शक्ति जप कर गायत्री का विसर्जन निम्न मंत्र से करें–

उत्तमें शिखरे जाता भूम्यां पर्वत मूर्धनिं ।
ब्राह्मणैभ्यरनुज्ञाता गच्छ देविं यथा सुखम्।।

प्रदक्षिणा–

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणस्यन्ति प्रदक्षिणायां पदे पदे।।

मंत्र से परिक्रमा करे।

अथ पूजन प्रारम्भ

प्रातःकाले

शुभग्रह अनुकूल समये शुभ दिने शुभ लग्ने च कृतनित्यक्रियो
यजमानः शुभासने, प्राङ्मुख उपविश्यः स्वदक्षिणतः पत्नींचोपवेश्य।

प्रथम गणेश वन्दना करें।

सर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्ध मधुपव्यालोल गंण्डस्थलं ।।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिंसिद्धिप्रदंकामदम् ।।

हरि वन्दना–

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्‌विभ्रते ।
दैत्यं दारयते वलिं द्दलयते क्षत्रंक्षयं कुर्वते ।।
पोलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते।
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

गंगा ध्यान

पापापहारि दुरितारि तरंगधारी।
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारी।।

प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्यान्हे ह्वदि संस्थितम् ।
सायं जपे च नासाग्रे एतत् जपः विधि स्मृतः।।

प्रातःकाल हाथ में माला लेकर जप नाभी के समक्ष दिन में ह्वदय के पास तथा सांयकाल को जप नासिका के पास करें।

अनामिका मूलमारभ्य कनिष्ठा दिति एव च।
तर्जनी मध्य पर्यन्त अष्टपर्वसु संजपेत।।

झकारकारि हरिपादरजोऽपहारि।
गांगपुनातु सततंशुभकारीवारि।।

ॐइमं में गंगे यमुनें सरस्वति सतद्रु स्तोमं स च ता परुष्ण्या असिक्न्यामरुद्वृधः वितस्तया जीकीये श्रुणुह्या सुषोमया ।। मन्त्र से गंगाजल का पूजन करे फिर गंगाजल को कर्मपात्र में स्थापित करें तथा इस मंत्र से जल अभिमंत्रित करे।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
इष्ट देवताभ्योनमः कुलदेवताभ्यो नमः ग्राम देवताभ्यो नमः

पंचगव्य संम्मेलनम्–(गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी)
गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्ध द्वारेति गोमयं।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्रोव्णेति वै दधि।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य कुशोदकम् ।।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियोयोनः प्रचोदयात्।।



ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्
भवावाजस्य संङ्गथे।।
ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषंजिष्णो रश्वस्य ब्वाजिनः
सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयू ँषितारिषत्।।
ॐ तेजोऽसि शुक्क्रमस्यमृतमसि धामनामासि
प्रियन्देवानामनाधृष्टदेवयजनमसि।।
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

पंचगव्य प्रोक्षणम्–(पंचगव्य को छिडक देवें)
ॐ आपो हिष्टा मयोभुवस्ता न ऽउर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा चनः।। प्राशनम्। (पंचगव्य को पी लेवें)।

यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनं पंचगव्यस्य दह त्यग्नीरिवेन्धनम्।।
आचमन करे– ॐ अच्युताय नमः स्वाहा ॐ केशवाय नमः स्वाहा। नारायणायनमः स्वाहा। माधवायनमः स्वाहा ।। हस्तप्रक्षालनम् ।।

वामहस्त गंगोदकं सकुश दक्षिण हस्तेन–

ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः सः वह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पु–नाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

भूतोत्सारणम्– ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषाँ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विध्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषांमविरोधेन यज्ञकर्म समारभेत्।।

आसन पूजन करें– अस्य श्री आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सुतल छन्दः आसनोपवेशनें पूजनें विनियोगः। जल छोड़कर पृथिवी का पूजन करें।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः। पृथ्व्यै नमः। आधार शक्ते नमः। शेष

व्रतवन्धे विवाहे च चतुर्थीसह भोजनै।
व्रते दानें मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।

नागायनमः। कूर्मासनायः नमः । कमलासनाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप. नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना करे–

पृथिवी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृताः।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम्।।

घण्टा पूजन करे–

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा ँस्यङ्गानि यजूँषि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्या शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत।।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
सर्व भूत हितार्थाय घण्टा नादं करोम्यहम् ।।

(अंगिरा)–विनादर्भश्च यत्स्नायच्चदानविनोदकं।
असंख्यातं च जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।।
भूतशुद्धि विनायेनः क्रीयते यज्जपादिकम्।
तत्सर्वं, निष्फलं प्रोक्तं तस्मातां पूर्व माचरेत्।।
गव्य माज्यं दधि क्षीरं माक्षिकंशर्करान्वितं।
एकत्रं मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पंचामृतं परम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थ गरुडाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि गरुड़ मुद्रां प्रदर्श्य घण्टां वादयित्वा वामपार्श्वे स्थापयेत्।

शंख पूजन करे–

अग्निऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्।। त्वं पुरा सागरोत्पनों विष्णुनां विधृत करे। नमन्ति सर्व देवश्च पांचजन्य नमोऽस्तुते ।। शंखं वादयित्वा।। ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थ देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि।।

धूप पात्राये नमः।

ऋताषाडऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौष धयौऽप्यसरसो मुदो नाम। स नऽ इन्द्रं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मैं स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा। गन्धर्व देवाय धूप पात्रायै नमः सर्वोपचारार्थे पूजयामि।

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि मोक्ष श्री व्याघ्र चर्मणि।
वशाजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःख मोचनम्।।
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेवच।
दारुजं तालपंत्र वा आसनं परिकल्पयेत्।।

।।सूर्य पूजन।।

सूर्य पूजन निम्न मंत्रों से करे–

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो। सर्वात्मनें सप्तहयाय भानवे।। अन्नन्तशक्तिर्मणि भूषणेन। ददस्व भक्तिं मम मुक्तिभव्याम्।।

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्विमणि गृहेशं। सिन्दूर वर्ण प्रतिभाव भासं, भजामि सूर्यं कुलवृद्धि हेतवः।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानों निवेशयन्नमृतं मर्त्यंञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

एहि सूर्य सहस्राशों तेजोराशी जगत्पते।
अनुकम्पाहि मां भक्या गृहाणांर्ध्य दिवाकर ।।
अर्घ्यदेवे।

ॐ आदित्याय नमः, रवयेनमः, भानवे नमः, गंन्धाक्षतंपुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि । नमस्करोमि।

एक चक्र रथोयस्य दिव्य कनक भूषितः।
सः में भवतु सुप्रीतः पद्‌महस्तो दिवाकरः।
आदित्याय नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदिने।
जनमान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोऽपजायते ।

घण्टी बजाने के समय–

स्नानें धूपे तथा दीपै नैवेद्ये भूषणै तथा।
घंण्टानादं प्रकुर्वितं तथा निराजनेऽ पिच।।

नमोधर्मविधात्रेहि नमो कर्मसु साक्षिणे।
नमो प्रत्यक्ष देवाय भाष्कराय नमो नमः।।

अर्घ्य के शेष जल से सामग्री पर छींटे देवे–

ॐ आपो हिष्टा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमों रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः तस्मांऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

अर्घ्य के दिये जल को आँखों पर लगाये–

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताछुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

भस्म धारण करने का मंत्र–

ॐ अग्निरिति भस्म। वायुरिति भस्म। जलमिति भस्म। स्थलमिति भस्म। व्योमिति भस्म। सर्वँ हवा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि।।

रुद्राक्ष धारण करने का मंत्र–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्न्मृत्यौर्मुक्षिय माऽमृतात्।

शिखा बान्धने का मंत्र–

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्नुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व में।

अथ षडंगन्यास– ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सर्वितुर्वरेण्यं कवचाय हुं। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ धियोयोनः प्रचोदयात्। अस्त्राय फट्।

प्राणायाम–

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

नमस्कारं–

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वत मूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योमनुज्ञातां गच्छदेवि यथा सुखम्।।
यस्यस्मृत्वा च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

दीप पूजन

ॐ अग्नि र्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।

सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्विर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्योः ज्योतिः स्वाहा। सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना करे–

भो दीप देवरुपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव।।

श्री भैरव प्रार्थना–

तीक्ष्ण द्रंष्टं महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

ब्राह्मण पूजनम् –

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च

ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत्।।
अकृत्वा भाल तिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्।
स्नानें दाने जपे होमें सन्ध्यायां देवतार्चनें।
शिखा ग्रन्थिविना कर्म न कुर्याद्वै कदाचनः।।

विवः।। ॐ ब्राह्मण मद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्य मृषिमाषेंयँ सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातार माविशत्।। ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणों ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनु वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः प्रजन्यों वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पंच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

नमोऽस्तनंन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्रपादाक्ष–सिरोरुवाहवे। सहस्त्र नान्में पुरुषाय साश्वते सहस्त्र कोटि युगधारणे नमः।।

नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्‌हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमों नमः।।
ब्राह्मणं जंगमं तीर्थे त्रिषु लोकेषु विश्रुतं।
तेषां वाक्योदकेनैव शुद्यन्ते मलिनाः जनाः।।

नसः द्विजो य न करोति सन्ध्याः सन्ध्या न सा या मनसोविशुद्धिम्। शुद्धिर्नसा यत्र न सत्यमस्ति सत्यन्न तनिर्भयता न यत्र।।

गृहेषु प्रकृति सन्ध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता।
नदीषु शतसाहस्त्रं अनन्तं शिव संन्निद्यौ।।

प्रार्थना–

देवाधीनं जगत्सर्व मन्त्राधीनं च देवता।
ते मन्त्रं ब्राह्मणाधीनं तस्मात् ब्राह्मण देवता।।
यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रुपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्।।

यजमान का तिलक ब्राह्मण इन मंत्रों द्वारा करे–

ॐयुजन्तिव्रध्नंमरुषंचरंतंपरितस्तुषः रोचन्तेरोचनादिवि।
युजन्त्यस्यकाम्याहरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णूनृवाहसा।।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थसिद्धये।।
अक्षतं विप्रहस्ताश्च यो गृणान्ति नरः सदा।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुर्विद्यायशो वलम्।।

इस मंत्र से स्त्रीयों का तिलक करे–

ॐ श्री श्चते लक्ष्मींश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरुपमश्विनौव्यात्तम्।
इष्णंन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्।। से कन्या का तथा निम्न मंत्र से विधवा का तिलक करे–

ॐ तद्विष्णो परमँ पदँसदापश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुरा ततम्।।
यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदिनी।
यावत् राम कथालोके तावत् जीवतु बालकाः ।।

मंत्र से बालक का तिलक करे।

शान्ति पाठ (हाथ में पुष्प अक्षत लेवें)

ॐआनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धासो-
ऽअपरीतासउद्भिदः। देवानोयथासदमिद्वृधे
ऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे।।१।। देवानाम्भद्रा
सु मतिर्ऋजूयतांन्देवानाँ रातिरभिनोनिवर्तताम्। देवानाँ
सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽ-आयुः प्रतिरन्तुजीवसे।।२।।
तान्पूर्वयानिविदा-हूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षम्स्त्रिधम्।
अर्यमणं व्वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा
मयस्करत्।।३।। तन्नो व्वातो मयोभुव्वातुभेषजन्तन्माता
पृथिवी तत्पिताद्यौः। तद् ग्रावाणःसोमसुतोमयोभुवस्त-
दश्विना श्रृणुतंन्धिष्ण्यायुवम्।।४।। तमीशानं जगत-
स्तस्थुषस्पतिंन्धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषानो-
यथावेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुर्दब्धः स्वस्तये।।५।।
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प-

श्राद्धे यज्ञे जपे होमें वैश्वदेवे सुरार्चनें।
धृतत्रिपुण्ड पूतात्मा मृत्युज्जयति मानवाः।।
(कात्यायन)

र्तिद्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानोंविदथेषुजग्मयः। अग्निजिह्वा–
मनवः सूरचक्षसोव्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह।।७।।
भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवाभद्रं पश्येमाक्षभियजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।।
शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्।
पुत्रासोयत्रपितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतार्युगन्तोः।।६।।
अदिति द्योरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।।
विश्वेदेवाऽअदितिःपंच जनाऽ अदितिर्ज्जात–
मदितिर्ज्जनित्वम् ।।१०।। द्यौः शान्तिरन्तिरिक्षँ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।। वनस्पतयः
शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्ति र्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वँ शान्तिः
शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतोयतः
समीहसेततोनोऽअभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाम्यो अभयं
नः पशुभ्यः ।।१२।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परासुव यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।।१३।। गणाना न्त्वा
गणपतिँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिँ
हवामहेनिधीनान्त्वा निधिपतिँहवामहे व्वसो मम।।
आहमजानिगर्भधमात्वमजासिगर्भधाम्।।१४।।
अम्वेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन।।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकाम्पीलवासिनीम्।।१५।।

मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं। तंन्नोत्वरिष्ठं यज्ञँ समिमं दधातु।। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो२ प्रतिष्ठ।। १६।। शुशान्तिर्भवतु।।

चतुर्दश नमस्कार

ॐ श्रीमन्नमहागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मी–नारायणाभ्यांनमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यांनमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्योनमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्योनमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्योः नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्योनमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय–श्री मन्महागणाधिपतये नमः।। संकल्प–अद्यैत्यादि० अस्मिन् यज्ञ (प्रतिष्ठा, पूजन) कर्मणी गणपति पूजनं करिष्ये।

गणेश–गौरी पूजनम्

लाल अक्षत और दूर्वा लेकर गणेश का ध्यान करे–

रक्तवर्णाक्षतं दुर्वांकुरं गृहीत्वा गणपतिं ध्यायेत् ।
ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगज कर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।।

धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।२।।
विद्यारंम्भेविवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्त स्य न जायते ।।३।।
शुक्लाम्बरं धरं देव शशिवर्ण चतुर्भजं ।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।४।।
अभिप्सितार्थ–सिध्यर्थं पूजितोयः सुरासुरैः।
सर्वं विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।५।।
यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।६।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वरा ।
देवादिशन्तुनः सिद्धि ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा।७।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणाम्यादौ सर्वकार्यार्थ–सिद्धये ।।८।
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव तारावलं चन्द्रवलं तदैव।
विद्यावलं दैववलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेऽऽध्रियुगंस्मरामि ।।६।।
ॐ सर्व मंगल मांगल्ये। शिवे। सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि !नारायणि! नमोस्तुते।।१०।।

दूर्वा अक्षत चढ़ा देवे।

नाक्षतैअर्चयेत् विष्णु न तुलस्यां गजाननः।
नदूर्वया पूजयेत् दुर्गा विल्वपत्रैश्च भाष्करम्।। "ज्ञान मालायाम्"

विनियोग– गणानां त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहनें पूजनें विनियोगः।

गणेश स्थापन करे–ॐ गणानान्त्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम।। आवाहनम्–एह्येहि हेरम्व महेश पुत्र समस्त विघ्नौघविनाशदक्ष। मांगल्य पूजा प्रथमं प्रधानं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पुष्पासनम्–रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व शान्ति करंशुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाणं परमेश्वर ।।

पाद्यम्– गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्यसंयुतम् ।
पाद प्रक्षालनार्थाय अर्पयामि सुरेश्वर।।

अर्घ्यम्– स्वर्णपात्र स्थितं तोयं गंन्धपुष्पादिभिर्युतम्।
सहिरण्य ददाम्यर्घ्यं गृहाणं गणनायक।।

स्नानीयजलम्–सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
स्नानार्थं मया दतं गृहाण गजकर्णक।।

पयस्नानम्–

ॐपयः पृथिव्यापयऽ औषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे–
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।

दधि स्नानम्–

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषजिंष्णोर श्वस्य वाजिनः।
सुरभि नोंमुखा करत्प्रण आयूँ षितारिषत्।।

घृतस्नानम्—ॐघृतंघृतपावानः पिवतव्वसांवसापावानः पिवतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा।दिशः प्रदिश—ऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।।

मधुस्नानम्—मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः।।ॐ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता।।ॐमधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ २ऽ अस्तुसूर्य्यः।। माध्वीर्गावोभवन्तु नः।।

शर्करास्नानम्—ॐ अपाँरसमुद्वयसँसूर्येसन्तँ समाहितम्। अपाँरसस्ययोरसस्तंवो। गृह्णाम्युतममुपयामगृहीतोऽसिन्द्रायत्वाजुष्टंगृह्णाम्येषते—योनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्।।

उद्वर्तनस्नानम्—नानासुगन्ध द्रव्यं च चन्दनं केशरं युतम्। उद्वर्त्तनंमया दत्तं गृहाण गणनायक।।

शुद्धस्नानम्—कावेरी नर्वदा वेणी तुगभद्रा सरस्वती। गंगा च यमुना सा वाः स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।

वस्त्रम्— रक्ताम्बरंधराधीशं पाशाऽकुश धरेश्वरः। युग्मं वस्त्रं मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरः ।।

यज्ञोपवीतम्— नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

सुवर्णमूलैरचितं उपवीतं गृहाण में।।

गन्धम्—श्री खंड चन्दनं दिव्यं केशरादि समन्वितं।
गन्धं गृहाण देवेश मम सौख्य विवर्धयः।।

अक्षतम्—अक्षतं निर्मलं शुद्धं रक्त चन्दन मिश्रितं।
मयानिवेदिता भक्त्या गृहाणं गजकर्णकः।।

पुष्पम् दूर्वा—पाटलामल्लिका दूर्वा शत्पत्राणि विघ्नहृत्।
सुपुष्पाणि गृहाण त्वं विवुधप्रियसर्वतः।।

धूपम्— वनस्पति रसोद्भूतोगन्धाढ्योगन्ध उत्तमः।
आध्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीपम्—साज्यं च वर्तिका युक्तं वह्निनां योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्येतिमिरापहम् ।।

नैवेद्यम्—शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादु उत्तमम्।
नानाविधिं गृहाणेदं नैवेद्यं कृपया प्रभो।।

दक्षिणाम्—हिरण्यं गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तं पुण्यं फलदं मतः शान्ति प्रयच्छ में।

फलम्—इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरस्तवः।
तेन में सफलावाप्ती भवे जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बूलम्—पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

विशेषार्घ्यम्ः—रक्ष रक्ष गणाध्यक्षः रक्ष त्र्यैलोक्य रक्षक।

भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ।१।।
द्वैमातुर कृपा सिन्धो षाणमातुरग्रज प्रभो।
वरदं त्वं वरं देहि वाच्छितं वाच्छितार्थद ।।२।।
गृहाणार्धमिदं देव सर्व देव नमस्कृतम् ।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदामम।।३।।

प्रार्थना–

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।। नागाननाय सुरयज्ञविभूषिताय गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्न वरादाय नमो नमस्ते।।

नमस्ते वह्म रुपाय विष्णु रूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्र रुपाय करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरुप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदरं! नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियः।
निर्विघ्नं कुरु में देव! सर्व कार्येषु सर्वदा।।
अनया पूजया श्री गणेशः सांगं सपरिवारः प्रीयताम् न ममः।। अथसंकल्प।।

हाथ में तिल जल तथा वरणी द्रव्य रखे–

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मनें श्री पुराण पुरुषोतमस्य तत्सत् पृथिव्यां श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया पवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे सप्तमें वैवस्वत् मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे पंचाशत् कोटियोजनविस्तीर्ण भूमण्डलान्तर्गत सप्तद्वीमध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भरतखंडे तत्राऽपि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत काशी कुरुक्षेत्र पुष्कर– प्रयागादि नाना तीर्थ युक्त 'अमुक' जनपदे तत्जनपदान्तर्गते अमुक ग्रामें श्री गंगा यमुनयोर अमुक दिग्विभागे देव अग्नि ब्राह्मणानां सन्निधो श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्यसमयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुकनामसंवत्सरे अमुकायनें अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकराशि स्थिते सूर्ये, चन्द्रे गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशिष्ठे अस्मिन् शुभ क्षणे अमुक गोत्रोत्पनः अमुक शर्म्मा (वर्मागुप्त वा दासो) सपरिवारस्य सभार्यस्य मेषादि मीन पर्यन्तं समस्तभय व्याधी जरा पीड़ा दुरितोप शमनार्थ श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थ अस्माकं सर्वेषां सकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यायुरारोग्य एश्वर्य दीर्घायुः विपुल

धनधान्यस्थिरलक्ष्मींपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वकं मम इह जन्मनिं जन्मान्तरेवा कृतकायिक वाचिक मानसिकसांसर्गिक समस्तपाप क्षयार्थब्राह्मणद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ गणपत्यादि पंचाग देवता पंचोपचारेण षोडषोपचारेण पूजनं करिष्ये। साक्षतजलंक्षिपेत्।
अथवा–अमुक देवता प्रीत्यर्थं अमुक मंत्र जपपुरश्चरणं स्वयं ब्राह्मण द्वारा वा करिष्ये।

अथवा– वास्तु पूजनम्, षोड़षस्तंभ पूजनम् दिग्पाल पूजनम् वेदपूजनम् चतुःषष्ठिपूजनम् ब्रह्मा विष्णु महेश्वर महालक्ष्मीपूजनम् क्षेत्रपाल पूजनम् महाध्वजापूजनम् स्वयं वा ब्राह्मण द्वारा करिष्ये।।

अथवा–अमुक संख्या परिमिता अमुकमंत्रजप वा स्त्रोत्रपाठ करणार्थ अमुक गोत्रोत्पन्नान अमुकशर्म्मणो विप्रानेभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रिकासनमालावासोभिर्जापकत्वेन (पाठकत्वेन)युष्मानहं वृणे। इति वृता। ॐवृतास्मः प्रतिवचनम्। ततः पृथक–पृथक दक्षिण हस्ते यज्ञ सूत्रं वघ्नीयात्।

सूत्र बाधने का मंत्र–ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणां श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

ततः विप्रो यजमानहस्तेऽपि रक्षासूत्रं वघ्नीयात्

यजमान के हाथ में सूत्र बांधने का मंत्र–
ॐ यदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्यँ शतानिकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽआ वध्नामि शतशारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्।।

अथ कलश पूजनम्

भूमि का स्पर्श करके निम्न मंत्र पढे–

भूमिस्पर्श– ॐ भूरसि भूमिसरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृँ ह पृथिवीं मा हिँसीः।।

फिर भूमि पर धान्य रखे
ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा मह्रीनां पयोऽसि।।

धान्य के ऊपर कलश रखे
स्थापनम्–ॐआजिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः।। कलश में जल डाले
जलम्–ॐ वरुण स्योस्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ

पत्नी वाम करे सूत्रं वद्धं सौख्यं धनागमम्।
वहु सम्पति आरोग्यं रक्षार्थे कंकणं शुभम्।।

सर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋत् सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीत्।।

गन्धम्–ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणीम् इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

सर्वोषधी–ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुणामह ँ शतं धामानि सप्तच।।

दुर्वांकुरम्–ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

कुशांकुरम्– पवित्रेस्थो वैष्णोव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यछिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सप्तमृत्तिका–ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः।।

पूगीफलम् ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ँ हसः।।

पंचरत्नम्–ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्य क्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

दक्षिणाम्–ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

पंचपल्लव–ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता।

गोभाजइत्किलासथयत् सनवथ पुरुषम्।।
पूर्णपात्रम्–ॐपूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो।।
वस्त्रम्– ॐयुवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मानसा देवयन्तः।।

ततः वस्त्रावेष्टितं नारिकेल फलं पूर्णपात्रोपरि न्यसेत्।।
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामु म्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता वरुणावाहनेपूजनें विनियोगः।
आवाहनम्– तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानों वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न आयुः प्रमोषीः।। से आवाहन कर पूजन करे।

वरुण कलश देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे आसनं पाद्यं अर्घ्य आचमनीयं वस्त्रं गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि। पूजन सामग्री चढ़ाकर कलश में देवताओं का ध्यान करें।

कलशस्योपरि ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि देवता आवहनम्–
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ।।

प्रार्थना करे–

ॐ देवदानव सम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदाकुम्भविधृतो विष्णुना स्वयंम्।
त्वतोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणां प्रतिष्ठिताः।।
शिव स्वयं त्वमेवासि विष्णु त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैत्रिका।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः।।
सानिध्यं कुरु में देवः प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमों नमस्ते स्फटिक प्रभाय–
सुश्वेत हाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय

पंचरत्न–कनक, हीरक, नील, पद्मराग मौक्ति
पंचपल्लव–वट, पीपल, गूलर, आम, पलास,

जलाधि नाथाय नमो नमस्ते।।
अनया पूजया वरुण कलश देवता प्रीयन्ताम् न मम।।

अथ पुण्याह वाचनम्

प्रथम यजमान ब्राह्मणो का पूजन करे तत्पश्चात यजमान कहे–

ॐ शिवा आपः सन्तुः। यजमान ब्राह्मणो को जल देवे।

विप्राः–ॐ सन्तु शिवाः आप, ब्राह्मण जल लेवे।

यजमानः–ॐ सौमनस्य मस्तु, यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्राः–ॐ अस्तु सौमनस्यम्, ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमान–ॐ अक्षताः पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को अक्षत देवे।

विप्राः–ॐ मांगल्य मस्तु, ब्राह्मण अक्षत लेवे।

यजमानः–ॐ गन्धाः पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को गन्ध देवे।

विप्राः–ॐ आयु स्मस्तु, ब्राह्मण गन्ध लेवे।

यजमानः–ॐ पुष्पाणि पान्तु, यजमान ब्राह्मणों को पुष्प देवे।

विप्राः–ॐ सोश्रियमस्तु, ब्राह्मण पुष्प लेवे।

यजमानः–ॐ ताम्बूलानि पान्तु, यजमान ताम्वूल देवे।

विप्राः–ॐ एश्वर्य मस्तु, ब्राह्मण ताम्बूल लेवे।

यजमानः—ॐ दक्षिणाः पान्तु, यजमान ब्राह्मणो को दक्षिणा देवे।

विप्राः—ॐ बहुधनंचास्तु, ब्राह्मण दक्षिणा लेवे।

पुनः यजमान आचार्यादि ब्राह्माणो को प्रणाम कर प्रार्थना करें।

श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

विप्राः—तथास्तु।।

यजमानः—यत्कृत्वा सर्व वेद—यज्ञ—क्रिया कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहर्मोकारमादि कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वर्षिभिः। समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः – वाच्यताम्, इस प्रकार ब्राह्मण कहे।

यजमानः व्रत—नियम तपः स्वाध्याय ऋतुदमदानविशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

विप्राः—समाहित मनसः स्मः।

यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्त'।

विप्राः—प्रसन्नास्मः।

ततो यजमानः अवनिकृत जानुमंण्डलः कमल मुकुल सदृश अंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्ण (ताम्र) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये

प्रथमपात्रे किञ्चितउदकं पातयेत् तथा ब्राह्मण वदेयुः।

इसके पश्चात् यजमान उकडू बैठकर दोनों हाथों को कमल के समान अंजली बनाकर हाथों पर कलश रखे तथा कलश को शिर से लगावे। ब्राह्मण लोग दो पात्रों को रखे तथा प्रथम पात्र में थोड़ा जल डाले। और प्रथम पात्र के जल से यजमान को सपरिवार छिंटे लगावें।

ब्राह्मणः – शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविध्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्म्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु, वेद समृद्धिरस्तु, शास्त्रसमृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धन धान्य समृद्धिरस्तु इष्टंसम्पदस्तु।

दूसरे पात्र के जल को यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके।

अरिष्टनिरसनमस्तु यत्पापमरोगम ऽशुभम्ऽ कल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। पुनः प्रथम पात्र से–यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तराः हरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम् अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः

प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रियन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ पीयेन्ताम्। श्रद्धामेधे प्रीयन्ताम्। भगवती कात्यायनीप्रियन्ताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयन्ताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रियन्ताम्। भगवती सिद्धि करी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रियन्ताम्। भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयेन्ताम्। सर्वा कुलदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रियन्ताम्। सर्वाः इष्ट देवताः प्रियन्ताम्। पुनः द्वितीय पात्र से जल यजमान के ऊपर घुमाकर बाहर फेंके। हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवंयान्तु शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि साम्यत्वीतयः। पुनः प्रथम पात्र से—शुभानि वर्द्धन्ताम् शिवाः आपः सन्तु शिवा ऋतवः सन्तु शिवा अग्नयः सन्तु शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः सन्तु शिवा वनस्पतयः सन्तु शिवा अथितयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामें निकामे नः प्रजन्यों वर्षतु फलवत्यो न औषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पन्ताम्। शुक्रांगारक– बुध–बृहस्पति–शनैश्चर–राहु–केतु–सोम सहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्–नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवान् प्रजन्यः प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।।

ततौ यजमानः कलशं भूमौ निधाय प्रथम पात्रीय जलेन यजमानस्य सपरिवारस्य शिरः संमृज्य द्वितीय पात्र जलं एकान्ते पातयेत्।

यजमान कलश को भूमि पर रखे, ब्राह्मण प्रथम पात्र के जल से यजमान का सपरिवार अभिषेक कर दूसरे पात्र के जल को एकान्त में गिरा देवे। पुनः यजमान ब्राह्मण से प्रार्थना पूर्वक कहे–ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः– ॐ पुण्याहम् पुण्याहम् पुण्याहम्।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु

विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।

यजमानः – ॐ पृथिव्यामुद्घृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्ततकल्याणं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः–ॐ कल्याणम्, कल्याणम्, कल्याणम्।। ॐ यथे मां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायैं दातुरिह भूयासमयं में कामः समृध्यतामुपमादौ नमतु।।

यजमानः– ॐ सागरस्य च या लक्ष्मी–महालक्ष्म्यादिभिः कृताः। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु।।

ब्राह्मणाः – ॐ ऋद्धयताम, ऋद्धयताम्, ऋद्धयताम्।। सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिर–मृताऽअभूम् । दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः।।

यजमानः– स्वस्तिस्तुया तुध्यविनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी। विनायक प्रिया नित्यं तां च स्वस्ति

ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवन्तो बुवन्तु।।

ब्राह्मणाः– ॐ आयुस्मते स्वस्ति, आयुस्मतेस्वस्ति, आयुस्मते स्वस्ति।। ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु।।

यजमानः– समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्द कारका। हरि प्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मण मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विवति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः – ॐ अस्तु श्री, अस्तु श्री, अस्तु श्री।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।। विप्रेभ्यो दक्षिणादानम्।।

ॐ अद्यः कृतैतपुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिद्धर्थ तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजेत्। इति पुण्याहवाचनम्।।

अथ ॐ कारदेवतापूजनम्।

ओंकार में ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान करे—

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।

ओंकारस्थित ब्रह्माविष्णुर्महेश्वराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत् पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचोवेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐ कार कें ऊपर उक्त तीन मंत्रों से ब्रह्मा–विष्णु शिव का पूजन कर के फिर निम्न मंत्र से प्रार्थना करे



आकाशात् पतितं तोयं यथागच्छतु सागरे।
सर्वदेवं नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति।।

।। अथ "सप्तघृतमातृका पूजनम्"।।

ध्यान करे–

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।

पूजन करे–

श्री देव्यैभ्यनमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्यं च समर्पयामि।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णंन्निषाणामु मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।।

ॐ श्रीयेनमः। ॐलक्ष्म्यैनमः। ॐ धृत्यैनमः।
ॐ मेधायैनमः। ॐ स्वाहायैनमः।
ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ सरस्वत्यैनमः।
श्री लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।

मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तेता घृतमातरः।।

से प्रार्थना करे।

"अथ वसुधारा पूजनम्"

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेणसुप्वा कामधुक्षः।। वसुधारा देवताभ्योनमः सम्पूज्य। आवाहन आसनं पाद्यं अर्घ्यं पंचामृत स्नानं जल स्नानं वस्त्रं यज्ञोपवीतं चन्दनं अक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्यदक्षिणां च समर्पयामि। प्रार्थना–दिव्यवस्त्रा दिव्य देहा दिव्यमाला विभूषिता। वसवष्टौ महाभाग वरदाः सन्तु में सदा ।।

।। संक्षिप्तनान्दी श्राद्ध ।।

नान्दी श्राद्ध में विश्वेदेवा की दो कुशा पर गाठ देकर पत्ते पर रख देवे तथा दूसरे पत्ते पर माता पितामही प्रपितामही के निमित्त तीन कुशाओं को गाठ मार कर रखें। तीसरे पत्ते पर पिता पितामह प्रपितामह के निमित्त, चौथे पत्ते पर, मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही पाँचवे पर मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता मह हेतु कुल मिलाकर चार पत्तों पर तीन तीन कुशा एवं एक पत्ते पर दो कुशा विश्वेदेवा हेतु रख कर संकल्प करे। **तत्सदद्य**

मासोतमेऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुककर्मांगीभूतं आभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये।

ॐ सत्यवसु संज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूभुर्वः स्वः पाद्यं स्वाहा अनामयं च वृद्धि।

ॐ अमुक गोत्राः मातृपितामही प्रपितामह्य्चः नान्दीमुख्याः
ॐ भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धि । अमुकगोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः।। ॐ भूभुर्वः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि। अमुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः पत्नीसहिताः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्व इदं पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि। ॐ श्रीगणेशाम्बिके भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धिः।

इस प्रकार कह कर पत्तों के ऊपर रखी कुशाओं पर जल डाले। इसके उपरान्त प्रत्येक पत्तो पर गन्ध पुष्प आदि डाले। दीपक दिखावें नैवेध एवं दक्षिणा आदि भी चढ़ावें।

पुनः युग्म ब्राह्मण हेतु आमान्न संकल्प करे–
सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्यन्तं दास्यमानमन्न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहानामयंच वृद्धिः युग्म भोजन आमान्नं नैवेद्यं तन्निष्क्रयं दक्षिणां च दातुसमुत्सृजेत्।

प्रार्थना

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।।
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।
एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्।।
अनेनकर्मणाः नान्दीमुख देवताः प्रीयन्ताम् न ममः।।

अथ षोडश–मातृका पूजनम्

गौर्यादि षोडश मातृका का पुष्प लेकर ध्यान करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोड़श।।

गौर्याऽदि षोडश मातृका देवताभ्योनमः ध्यानं समर्पयामि।।

प्रतिष्ठापनम्–ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद् सदन मातरं पुरः। पितरं चप्रयन्त्स्वः। ॐ गंगणपतयेनमः आवाहयामिस्थापयामि पूजयामि। ॐ गौर्ये नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजययामि,। पद्मायै नमः आवाहयामि स्थापयामिः पूजयामि। शच्यैनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। मेधायै नमः

आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। सावित्र्यैनमः
आवाहयामि स्थपयामि पूजयामि। विजयायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। जयायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयांमि। देवसेनायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। स्वाहायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। मातृभ्योनमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजायामि। लोकमातृभ्योनमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। धृत्यै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। पुष्ट्यै नमः
आवाहयामि स्थपयामि पूजयामि। तुष्ट्यैनमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। कुल देवतायै नमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। गौर्याद्या षोडश मातृका गणपति सहिताः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु। गौर्यादिषोडश मातृकादेवभ्यो नमः गन्धाक्षंत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां ताम्बूलं फलं च समर्ययामि।।

प्रार्थना

ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यबदनां माहेश्वरी लीलया।
कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा बैष्णवी।।
वाराही घनघोर घुरघुरुमुखी चैन्द्रिच वज्रायुधा।
चामुण्डा गण नाथ रुद्र सहिता रक्षन्तु मां मातरः।।

।। अथ नवग्रह पूजनम ।।

वर्तुलाकृति सूर्य पूजन करे–रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
जपा कु–सुम–संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्व पापध्नं सूर्यआवाहयाम्यहम्।।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
ॐ भूभुर्वः स्व कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण सूर्यायः नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
अर्ध चन्द्राकृतिसोमपूजनकरे श्वेतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्–
दधि–शंख–तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्सनापतिं निशानाथं सोममावाह्याम्यहम्।।
ॐ इमं देवाऽ असपत्न ँसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्टयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा।। ॐ, भुर्भुवःस्वः यमुनातीरोद्भवः आत्रेयसगोत्रः शुक्लवर्ण सोमायनम, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि,।
त्रिकोणाकृति भौम पूजन करे–रक्त पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत कान्ति सम–प्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम। अपाँ रेताँ सिञ्जिन्वति।। भूर्भुवः स्वः अवन्ति देशोद्भव भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण भौमायनमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

वाणाकार बुध पूजन करे– हरितपुष्पाक्षतैरावाहयेत्। प्रियङ्ग कलिकाभासं रूपेणा ऽ प्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेत बुधमावाहयाम्यहम्।। ॐ उदवुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽ ध्युतरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण वुधाय नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

चतुष्कोणाकृति वृहस्पति पूजनकरे पीत, पुष्पाक्षतैरावाहयेत्। देवानांञ्च ऋषिणांच गुरु काञ्चन सन्निभम्। बन्द्य भूतं–त्रिलोकानां गुरुआवाहयाम्यहम्।। ॐ वृहस्पते ऽ अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण वृहस्पतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

पंञ्चकोणाकृति शुक्र पूजन करें–श्वैत पुष्पाक्षतैरावाहयेत्।

हिम–कुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।
ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा ब्यपिवत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।। ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण शुक्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

धनुराकारशनि पूजन करे–कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड सम्भूतं शनिआवाहयाम्यहम्।।
ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्र वन्तु नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण शनैश्चराय नमः आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

शूर्पाकार राहु पूजन करे–कृष्णपुष्पाक्षतैरावाहयेत्।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिहिका गर्भसम्भूतं, राहुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृत्ता।। ॐ भुर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण राहवेनमः आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ध्वजाकार केतु पूजनकरे--धूम्र पुष्पाक्षतैरावाहयेत्। पलाश पुष्प संङ्काश तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकम् घोरं केतुमावाह्याम्यहम्।।
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽ अपेशसे। समुष द्भिरजायथा।। ॐ।। भुर्भूवः स्व अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनीसगोत्र धूम्रवर्ण केतवेनमः आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि। सूर्यादिनवग्रह देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं हिरण्य दक्षिणां च समपर्यामि।
ॐ ग्रहा ऊर्जा हुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वो ऽ हमिषमूर्जँ समग्रभमुपयामगृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तम्।।
तत्रैव मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरिकां भद्रिका उल्का, शिद्धा, संकटा, अष्ट योगिनिभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि। पूजन कर प्रार्थना करे--

प्रार्थना

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मगलं मंङ्गलः।
सद्बुद्धिञ्च बुधौ गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनि।।

राहुर्वाहु वलं करोतु सततं केतुः कुलोस्योन्नतिम्।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।
आयुश्च विद्या च तथा सुखंच धर्मार्थलाभौवहुपुत्रतांच।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यताच तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।
ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतु सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु।।
अनेन पूजनेन नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् नममः।।

।। अथ अधिदेवता पूजनम्।।

ॐ त्र्यम्बकायैनमः।ॐ अम्बिकायैनमः। ॐ स्कंदायैनमः।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ इन्द्राय नमः।
ॐ यमाय नमः। ॐकालायनमः। ॐ चित्रगुप्तायनमः।।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणांच समर्पयामि।

।। प्रत्यधिदेवता पूजनम्।।

ॐ अग्नयेनमः। ॐ अद्भ्यः नमः। ॐ पृथिब्यैनमः।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ इन्द्राण्यैनमः।
ॐ प्रजापतये नमः। ॐ सर्पेभ्यः नमः। ब्रह्मणे नमः।।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप–दीप–नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

।। पंञ्चलोकपाल पूजनम्।।

ॐ गणपतये नमः। ॐ दुर्गायै नमः।
ॐ वायवे नमः। ॐ अन्तरिक्षायनमः ।
ॐ अश्विभ्यां नमः।

गणपत्यादि पंचलोकपाल देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

अथ
यज्ञ मंण्डप निर्माण

भूमि पूजन कर के–प्रथम अठारह या सोलह हाथ का समचौरस मंण्डप का निर्माण करे जगह की कमी के कारण चौदह या बारह हाथ अथवा दश या आठ हाथ लम्बा चौड़ा सम चौरस यज्ञ मण्डप का निर्माण करे। यज्ञ मंण्डप के मध्य में हवन कुण्ड का निर्माण करे। हवन कुण्ड में एक अंगुल कंण्ठ वनावै कुण्ड में सबसे ऊपर की मेखला चार अंगुल ऊँची एवं चौड़ी पीतवर्ण बनावै बीच की मेखला तीन अंगुल चौड़ी ऊची रक्त वर्ण की बनावै तीसरी मेखला सबसे नीचे की २ अंगुल चौडी ऊँची कृष्ण वर्ण की बनावै योनि बारह अंगुल ऊँची रक्त वर्ण की बनावै कुण्ड का निर्माण कर गोबर से लीप देवें तथा कुण्ड में पंञ्चगव्य का प्रोक्षण करे। यज्ञ कुण्ड के मध्य में

नाभिवनावै। मण्डप के नैऋत्य कोण में वास्तु वायव्य कोण में क्षेत्रपाल ईशान में ग्रह अग्निकोण में मातृका तथा पूर्व में प्रधान वेदी का निर्माण करें।

अब षोडषस्तंभ के देवता के ध्वजा आदि का रंग का निर्माण निम्न प्रकार से करे पहले चार स्तंम्भ यज्ञ कुण्ड के चारों ओर तथा चार यज्ञ मंण्डप के चारों कोनों पर तथा आठ स्तंभ चार द्वारो के कोनों पर लगावै। दश दिग्पाल हेतु १० ध्वजा पताका का निर्माण करे दिग्पाल एवं स्तंभ के रंग व ध्वजा निम्न प्रकार लगावें।

अथ

"षोडष स्तंभ स्थापन"

क्र.	देवता	दिशा	ध्वजा का रंग
१.	ब्रह्मा	अन्तरीशान	रक्त
२.	विष्णु	अन्तराग्नेय	कृष्ण पीत
३.	रूद्र	नैऋत्य	श्वेत पीत
४.	इन्द्र	वायव्य	पीत
५.	सूर्य	वहिरीशान	रक्त
६.	गणपति	इशान–पूर्व मध्य	श्वेत
७.	यम	पूर्व–आग्नेयमध्य	कृष्ण
८.	स्कंन्द	वाह्याग्नय	कृष्ण

९.	अनन्त	आग्नेय–दक्षिणमध्य	कृष्ण
१०.	वायु	दक्षिण–नैऋत्यमध्य	धूम्र
११.	सोम	नैऋत्य	पीत
१२.	वरुण	पश्चिम–नैऋत्यमध्य	श्वेत
१३.	वसु	पश्चिम--वायव्यमध्य	श्वेत
१४.	कुवेर	वायव्य	पीत
१५.	वृहस्पति	उत्तर–वायव्य मध्य	पीत
१६.	विश्वकर्मा	उत्तर–ईशान मध्य	रक्त

।। दश दिग्पाल स्थापनम्।।

क्र.	देवता	दिशा	रंगध्वजा पताका
१.	इन्द्र	पूर्व	पीत
२.	अग्नि	अग्निकोण	रक्त
३.	यम	दक्षिण	कृष्ण
४.	निऋत	नैऋत्य	हरित
५.	वरुण	पश्चिम	श्वेत
६.	वायु	वायव्य	धूम्र
७.	कुवेर	उत्तर	पीत
८.	रूद्र	ईशान	श्वेत
९.	ब्रह्मा	ईशान–पूर्व मध्य	रक्त
१०.	अनन्त	नैऋत्य–पश्चिममध्य	कृष्ण

।। चतुर्वेद स्थापनम्।।

क्र.	वेद	दिशा	ध्वजा के रंग
१.	ऋग्वेद	पूर्व	रक्त
२.	यजुर्वेद	दक्षिण	धूम्र
३.	सामवेद	पश्चिम	श्वेत
४.	अथर्ववेद	उत्तर	पीत

महाध्वजा यज्ञ मंडप के ईशान में लगावै।

अथ
"कलश स्थापन"

यज्ञ मंडप में निम्न कलश स्थापना करे

क्रम	देवता के हेतु	कुल कलश
१.	वरुण	१
२.	पांचवेदी हेतु	५
३.	रुद्र, कलश	१
४.	शान्ति कलश	१
५.	पुण्याहवाचन कलश	१
६.	स्थंभ कलश	१६
७.	दिग्पाल कलश	१०
८.	वेद कलश	४

नोटः— पहले कलशों का पूजन वरुण कलश पूजन

के समय कर देवें तथा यथा स्थान रख देवें प्रत्येक दिन भी वेदी स्तंभ दिग्पाल वेद पूजन के समय भी पहले कलश पूजन कर फिर स्तंभ आदि का पूजन करे।

अथ

।। वास्तु मण्डल पूजनम् ।।

नैऋत्य कोण में वास्तु वेदी बनाकर वास्तु प्रतिष्ठा करें–

एकाशीति पदं वास्तु गृह कर्मणि शस्यते।
चतुः षष्टिपदं वास्तु प्रासादे देवभूभुजाम् ।।

अद्य अमुक तिथौ अमुक देवता प्रतिष्ठायाः सांगता सिद्ध्यर्थ 'चतुषष्ठिपदे नैऋत्य कोणे शिखिन्यादि वास्तु मण्डल देवता पूजनंकरिष्ये। अब वास्तु वेदी के चारों कोनों पर चार शंकु रोप कर प्रार्थना करे।

विशन्तु भूतले नागा लोकपालश्च सर्वतः।
मंण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा।।

शंकु को मौली से बांध कर पूजन कर देवे। इसके बाद वास्तु वेदी के उपर रेखाओं का पूजन करे

ॐ लक्ष्मै नमः। यशोवत्यै नमः। कान्तायैनमः। प्रियायै नमः। विमलायैनमः। शिवायैनमः। सुभगायै नमः। सुमत्यै नमः। इडायै नमः। धान्यायै नमः। प्राणायै

नमः। विशालायै नमः। स्थिरायै नमः। भद्रायै नमः। जयायै नमः। निशायै नमः। विरजायै नमः विभवायै नमः।। ॐ रेखा देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवैद्य दक्षिणां च समर्पयामि।

इसके पश्चात स्वर्ण या रजतमयी वास्तु मूर्ति को पात्र में रखकर घी लगाकर पंचामृत व जलधारा देवें –

ॐ समुद्रस्यत्वा वकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽ अस्मभ्य ँ शिवोभव।। ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽ अस्मभ्य ँ शिवोभव।। ॐ अपामिदं न्ययन ँसमुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव।। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषेनमस्तेऽ अस्त्वर्चिषे। अन्यांस्तेऽ अस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवोभव।। ॐ प्राणदाअपानदा व्यानदावर्च्चोदाव्वरिवोदाः। अन्यास्तेऽअस्मत्त्पन्तुहेतयः पावकोऽ अस्भय ँ शिवोभव।। इस प्रकार दूध जलधारा देकर मूर्ति को वाम हाथ में लेकर दक्षिण हाथ से ढक कर निम्न मन्त्रों से प्राण प्रतिष्ठा करे–

ॐ आं ह्रीं क्रौ यं रं लं वं शं षं सं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः प्राणा इह तिष्ठन्तु।

ॐ आं ह्री क्रौ यं रं लं वं शं षं सं हं क्ष सः सोऽहं अस्तु वास्तु मूर्तेर्जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्री क्रौ यं रं लं वं शं षं सं हं क्ष हं सः

सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः वाड्मनस्त्वक् चक्षुः क्षोत्र जिह्वा घ्राणपाणिपाद पायुपस्थानि इहागत्यं सुखं चिरंतिष्ठन्तु ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठ यज्ञ ँ समिम दधातु।। विश्वे देवा स ऽ इह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठः।।

ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यैप्राणा क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमचार्यै माम हेतीति कश्चन। वास्तुपुरूष प्रतिष्ठितो वरदो भव।।

वास्तु मूर्ति को कलश पर रख कर आवाहन करे।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नौ जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। वास्तु पुरुषाय नमः इहागच्छ इहातिष्ठः सुप्रतिष्ठः वरदो भवः। शिखिन्यादि वास्तुदेवताभ्यो नमः
१. ॐ शिखिनेनमः शिखिनमाहावयामि स्थापयामि पूजयामि।
२. ॐ प्रजन्याय नमः आ. स्थ. पू.। ३. जयन्ताय नमः।
४ ॐ कुलिशायुधाय नमः। ५. ॐ सूर्याय नमः।
६. ॐ सत्याय नमः। ७. ॐ भृशाय नमः।
८. ॐ आकाशाय नमः, ९. ॐ वायवे नमः

१०. ॐ पूष्णे नमः, ११. ॐ वितथाय नमः
१२. ॐ गृहक्षताय नमः। १३. ॐ यमाय नमः।
१४. ॐ गन्धर्वाय नमः। १५. ॐ भृगराजाय नमः।
१६. ॐ मृगाय नमः। १७. ॐ पितृभ्योनमः।
१८. ॐ दौवारिकाय नमः। १६. ॐ सुग्रीवाय नमः।
२०. ॐ पुष्प दन्ताय नमः। २१. ॐ वरुणाय नमः।
२२. ॐ असुराय नमः। २३. ॐ शोषाय नमः
२४. ॐ पापाय नमः। २५. ॐ रोगाय नमः।
२६. ॐ अहये नमः। २७. ॐ मुख्याय नमः।
२८. ॐ भल्लाटाय नमः। २६. ॐ सोमाय नमः।
३०. ॐ सर्पाय नमः। ३१. ॐ आदित्यै नमः।
३२. ॐ दित्यै नमः। ३३. ॐ आपाय नमः।
३४. ॐ सावित्राय नमः। ३५. ॐ जयाय नमः।
३६. ॐ रुद्राय नमः। ३७. ॐ अर्यम्णेनमः।।
३८. ॐ सवित्रे नमः। ३६. ॐ विवस्वते नमः।।
४०. ॐ विवुधाधिपाय नमः। ४१. ॐ मित्रायनमः।।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे नमः। ४३. ॐ पृथ्वीधराय नमः।।
४४. ॐ आपवत्साय नमः। ४५. ॐ ब्रह्मणे नमः।
४६. ॐ चरक्यै नमः। ४७. ॐ विदार्ये नमः।
४८. ॐ पूतनायै नमः। ४६. ॐ पापराक्षस्यै नमः
५०. ॐ पूर्वे स्कंदायनमः। ५१. ॐ दक्षिणे अर्यम्णे नमः।

५२. ॐ पश्चिमें जृम्भकायनमः। ५३.ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय नमः।
५४. ॐ पूर्वे इन्द्राय नमः। ५५. ॐ आग्नेयां अग्नये नमः।
५६. ॐ दक्षिण यमाय नमः। ५७. ॐ नेऋते निर्ऋतये नमः।
५८. ॐ पश्चिमें वरुणाय नमः। ५६. ॐ वायव्य वायवे नमः।
६०. ॐ उत्तरे कुवेराय नमः। ६१. ॐ ईशान्या इश्वराय नमः।
६२. ॐ ब्रह्मणे नमः। ६३. ॐ अनंताय नमः।
६४. ॐ वास्तु पुरूषाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा दधिमाषादेनं दीप सहितं समर्पयामि।

प्रार्थना

ॐ नमोऽस्तु वास्तु देवेश सर्वदोष हरोभव।
शान्ति कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।
ॐ मंन्त्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धा विवर्जितम्।
यत्पूजितं मया वास्तो परिपूर्ण तदस्तुमें।।

।। अथ षोडष स्तंभ पूजनम्।।

यज्ञ कुण्ड के बाहर लगे पहले ईशान कोण में कलश पूजनकर ब्रह्मा का पूजन करें–

१. अन्तरीशानें पूर्व वरुण पूजां कृत्वा प्रथम स्तंभ ब्रह्मणे नमः। ॐ ब्रह्म जज्ञानमिति गौतम ऋषिः

त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्माऽऽआवाहने पूजनें विनियोगः। जल छोड़ देवें।

एह्येहि विप्रेन्द्र पिता महेश,हंसाधिरूढ त्रिदशैक वन्ध।
श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त, गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मदैवत संज्ञक स्तम्भेहागच्छ। सस्थूणनाग मात्रृकाय ब्रह्मदेवत संज्ञक स्तम्भाय नमः। गन्धाक्षतपुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि।

प्रार्थना

कृष्णाम्बराऽजिनधर पदमासन चतुर्भुज। जटाधर जगद्धात प्रसीद कमलोद्भव।। ॐ सावित्र्यै नमः। ब्राह्मयै नमः। गंगायै नमः। से पूजन कर स्तंभ का आलंभन करके बोले—ॐ उर्ध्व उषुण ऊतये तिष्ठा देवो नः सबिता। उर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विहयामहे।।

“स्तंभशिरसि नागमात्रे नमः” संम्पूज्य शाखां वद्ध्वा—ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः। क्षमापनम्—ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।

शंन्न कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्य।।
ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो निर्मितो विश्व कर्मणा।
स्थिरों भव रक्षार्थ यावत्कर्म समाप्तये।।१।।

अन्तराग्नये– इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता विष्णु आवाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि नारायण दिव्य मूर्ते, सर्वामरैरर्चितपादपद्म।
शुभाशुभानन्द शुचामधीश, गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ँसुरे स्वाहा।। ॐ भूर्भुव स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ। विष्णवेनमः गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां चसमर्पयामि।।

प्रार्थना

देव–देव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो।
पाहिदुःखांवुधेरस्मान भक्तानुग्रह कारक।।
ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः।

पूजन कर पूर्ववत् उर्ध्व उषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये तक पूरे मंत्र बोले।।२।।

नैर्ऋत्ये–नमस्ते इति परमेष्ठी ऋषिर्गायत्रीछन्दो रुद्रो देवता रुद्रावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि गौरीश पिनाक पाणे, शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ।

देवाधि देवेश महेश नित्यं गृहाण पूजा भगवन् नमस्ते।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोतऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इहः तिष्ठ। रूद्राय नमः।

–गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि।

प्रार्थना

पंचवक्त्र वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव।

चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव।।

ॐ माहेश्वर्ये नमः। ॐ गौर्ये नमः। ॐ शौभनायै नमः। से पूजन कर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये इत्यादि मन्त्र बोले।।३।।

वायव्ये– त्रातारमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ, सहस्रनेत्रत्रिदशैक वन्द्य।

शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्रँ हवेहवे सुहवँ शूरमिन्द्रम्।

हयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्रँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः।

गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेध दक्षिणा च समर्पयामि।

प्रार्थना

देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो।
वज्रहस्त महावाहो वाच्छितार्थप्रदो भवः।।
इन्द्राण्यै नमः। आनन्दायै नमः। विभूत्यै नमः।
पूजन कर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये।
इत्यादि मंत्र बोले।।४।।

यज्ञ मंडप के ईशान में– चित्रमिति कुत्स ऋषिविराट् छन्दः सूर्यो देवता सूर्यावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्–एह्येहि सप्ताश्व सहस्र भानौ, सिन्दूरवर्ण प्रतिमावभास। छायापते सूर्य दिनेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ चित्रंदेवानांमुदगादनी कं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवी ऽ अन्तरिक्षँ सूर्यऽ आत्मा जगत स्तस्थुषश्च।।

ॐ भूभुर्वः स्वः सूर्य इहागच्छ। इहतिष्ठ। सूर्याय नमः।
गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च समर्पयामि।

प्रार्थना

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल।
क्षमाकुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते।।
ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मंगलायै नमः। भृत्यै नमः।

पूजनकर उर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।५।।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये—ॐ गणानां त्वेति प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्—एह्येहि हेरम्ब महेश पुत्र समस्त विघ्नोघविनाशदक्षः।

मांगल्य पूजां प्रथमं प्रधानं, गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ गणाना त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति ँ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ। इह तिष्ठ। गणपतये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियः।
अविध्न कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

ॐ विघ्न हारिण्ये नमः। जयायै नमः। सरस्वत्यै नमः।

पूजन कर उर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।६।।

पूर्वाग्नेययोर्मध्ये– ॐ यमाय त्वेतिदध्यङ्गाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो यमों देवता यमावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। विशाल वक्षः स्थल रुद्र रूपं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ यमाम त्वा मखायत्वा सूर्यस्य त्वा तपसे।

देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सँस्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ भूर्भुव स्वः यमेंइहागच्छ इह तिष्ठः यमाय नमः गधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

प्रार्थना

धर्मराज महाकाय दंण्डहस्त वरप्रदः।
रक्तेक्षणं महावाहो पाहियज्ञं नमोऽस्तुते।।

ॐ पूर्व संन्ध्यायै नमः। क्रूरायै नमः। नियन्त्र्यै नमः।

पूजन कर उर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्रबोले।।७।।

वाह्याग्नये– ॐ यदक्रन्द इति भार्गव–जमदग्नि दीर्घतमस ऋषयः त्रिष्टुप छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने पूजने विनियोगः

आवाहनम्– एह्येहि गौरीसुत देवदेव षत्कृत्तिकारक्षित–देहयष्टे।

मयूरवाह प्रणतार्तिहारिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्यसमुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य वाहूऽउपस्तुत्यं महिजातं तेऽ अर्वन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ। स्कंन्दाय नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा च सर्मपयामि।

प्रार्थना

मयूरवाहन स्कद गौरी सुत षडानन।
कार्तिकेय महावाहो दयां कुरू दयानिधे।।

ॐ जयायै नमः। विजयायै नमः। पश्चिम संध्यायै नमः। पूजन कर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।८।। आग्नेयदक्षिणयोर्मध्ये– ॐ नमोऽस्त्विति देवश्रवा ऋषिः स्त्रिष्टुप छन्दो अनन्तो देवताऽ नन्तावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि नागेन्द्र धरामरेश नागाडंना किन्नर गीयमान। अनन्त यक्षोरग लोक संधैगृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः

अनन्त इहागच्छ। इह तिष्ठः। अनन्ताय नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेधं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित।

पाहि यज्ञमिमं देव फणसप्तक मण्डित।।

ॐ अधरायै नमः। पद्मायै नमः। महापद्मायै नमः। पूजन कर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।६।।

दक्षिण नैत्रृत्य मध्ये–ॐ वायुरिति वशिष्ठ ऋषि स्त्रिष्टुप छन्दो वायुर्देवता वाय्यावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्– येह्येहिवायो मम्र रक्षणाय मृगाधिरूढः सहसिद्ध संधै।

प्राणधिपः कालकवे सहाय गृहाण पूजां भगवनमस्ते।।

ॐ वायुरग्रेगाः यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः।। ॐ भूभुर्व स्वः वायोइहागच्छ। इहतिष्ठः। वायवे नमः। गन्धाक्षतं पुष्प धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

नमोधरणि पृष्ठस्थ ध्वजधारिन समीरण।
पाहियज्ञमिमं देव प्रसन्नोभव में सदा।।

ॐ तीव्रायै नमः। गायत्र्यै नमः। वायव्यै नमः। पूजन कर उर्ध्व ० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।१०।।

नैऋत्ये–सोममिति बंधु ऋषिः गायत्री छन्दः सोमोदेवता सोमावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहनम्–एह्येहि सोमाध्वर देवदेव विधत्स्व रक्षां भगणेन सार्धम्।

सर्वोषधीभिः पितृभि सहैव गृहाणं पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ सोमँ राजानमवसेऽ ग्निमन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णुँ सूर्य ब्रह्माणं च वृहस्पतिँ स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ। इह तिष्ठः सोमाय नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा चं समर्पयामि।

प्रार्थना

क्षीरार्णव–समुद्भूत द्विजराज सुधाकर।
सोम त्वं सोम्य भावेन् ग्रहपीड़ा निराकुरू।।

ॐ सावित्र्यै नमः। अमृत कलायैः नमः विजयायै नमः।। पूजन कर उर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।११।।

पश्चिमनैऋत्ययोर्मध्ये–ॐ इमं में वरुणेति वत्स ऋषिः वृहती छदो वरुणो देवता वरुणावाहने पूजनें विनियोगः।

आवाहनम्–येह्येहि यादोगणवारिधीश प्रजन्य देवाप्सरसा गणेन।

विद्या धरेन्द्रामरगीयमानं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ इमं में वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ वरुणाय नमः।

गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

प्रार्थना

शंखस्फटिक वर्णाभ श्वेतहाराम्बरा वृता।

पाश हस्तमहावाहो वरूणत्वं दया कुरू।।

ॐ वारुण्यै नमः। वार्हस्पतये नमः। पाशधारिण्यै नमः। पूजनकर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।१२।।

पश्चिम वायव्यमध्ये–ॐ सुगाव इति वशिष्ठ ऋषिः गायत्री छन्दः वसुर्देवता वस्वावाहने पूजनें विनियोगः।

आवाहनम्– एह्येहि देवेश्वर दिव्यदेह वसो प्रसन्नात्म दृगष्ट मूर्त्यै।

ममास्य यागस्य सुरक्षणार्थ गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्म्म य ऽ आजग्मेदँ सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीँ ष्यस्मै धत वसवो वसूनि स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वसो इहागच्छ। इह तिष्ठ वसवे नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

दिव्य वस्त्राष्टमूर्ते त्वं दिव्य देह धर प्रभो।
पाहियज्ञ मिमं देव वरदत्वं नमाम्यहम्।।

ॐ विनतायै नमः। गरिमायै नमः। सम्भूत्यै नमः। पूजन कर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक मंत्र बोले।।१३।। वायव्ये– सोमोधेनुमिति गौतम ऋषिः त्रिष्टुप छन्दो धनदो देवता धनदावाहनें पूजनें विनियोगः।

आवाहनम्–एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशाल वेताल पिशाचसघैः ममध्वरं पाहि कुवेर देव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ सोमोधेनुँ सोमोऽ अर्वन्तमाशुँ सोमो वीरं कर्मण्यंददाति सादन्यं विदथ्यँ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाश दस्मै।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनद इहागच्छ। इह तिष्ठः। धनदायैनमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च सर्मपयामि।

प्रार्थना

दिव्य देह धनाध्यक्ष पीतहाराम्बरावृतः।
उत्तरेश महावाहो वाच्छितार्थ प्रदोभवः।।

ॐ आदित्यै नमः। सिनीवाल्यै नमः लघिमायै नमः। पूजन कर उर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये तक पूरे मंत्र बोले।।१४।।

उत्तरवायव्यमध्ये– वृहस्पति इति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप छन्दो वृहस्पतिर्देवताबृहस्पत्या वाहनें पूजनें विनियोगः।

आवाहनम्–एह्येहि देवेन्द्रगुरोमखेश वृहस्पते यज्ञपते सुयागे।
रक्षार्थमंत्रोपविशानुकम्पिन् गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते।।
ॐ वृहस्पतेऽअति यदर्योऽ अर्हाद द्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽ ऋत प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
उपयामगृहीतोऽसि वृहस्पतये त्वैष ते योनिर्वृहस्पतये त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वृहस्पतेइहागच्छ इह तिष्ठः। वृहस्पतये नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां चं समर्पयामि।

प्रार्थना

देवाचार्य यथा शक्त्या पूजितोऽसि मयामुदा।
क्रूर ग्रहोपशान्त्यर्थ शान्ति मन्त्र प्रयच्छ में।।

ॐ पौर्णमास्यै नमः। वेदमात्र्यै नमः। सन्नत्यैनमः। पूजनकर ऊर्ध्व० से यावत्कर्म समाप्तये। तक पूरे मंत्र बोले।।१५।।

उत्तरेशानयोर्मध्ये—विश्वकर्मन् इति शास ऋषि त्रिष्टुप् छन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मा वाहनें पूजनें विनियोगः। आवाहनम्—एह्येहि शिल्पीश्वर विश्वकर्मन् मूर्त्यादि निर्माण करैक मुख्य। दोर्दण्ड संसाधित सर्वशिल्प गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रं कृणोरवध्यम्। तस्मैं विशःसमनमंत पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मन् इहागच्छ। इहतिष्ठः विश्वकर्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च सर्मपयामि।

प्रार्थना

विश्वकर्मन् प्रसीद त्वं शिल्पशास्त्र विशारद।
दण्डपाणे महावाहो तेजो मूर्ति धर प्रभो।।

ॐ वास्तु देवतायै नमः। वैश्वकर्मण्यै नमः। शारदायै नमः पूजन कर उर्ध्व० से **यावत्कर्म समाप्तये**। तक पूरे मंत्र बोले।।१६।।

अनेंन पूजनेन ब्रह्मादि षोडष स्तंभ पूजनें प्रियताम् इदं न मम।

।। अथ दश दिग्पाल पूजनम्।।

दश दिग्पाल का पूजन निम्न क्रम से करें—

पूर्व में— **ॐ त्रातारमिति गर्ग ऋषित्रिष्टुपुछन्दः इन्द्रोदेवता सदीप दधिमाषभक्त—बलिदाने पूजनें विनियोगः।**

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्रँ हवेहवे सुहवँशूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्रँस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छाइह तिष्ठः। इन्द्रायै नमः सम्पूज्य।।

मंण्डले संप्रवक्ष्यामि मयाभक्त्या निवेदयेत्।
इदं अर्ध्य इदं पाद्यं दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दधिमाष बलिदान देवें।।१।। अग्निकोण में— **त्वन्नो अग्ने इति हिरण्यस्तूप ऋषिः त्रिष्टुपछन्दो।**

अग्निदेवता सदीप दधिमाषभक्त बलिदानें पूजनें बिनियोगः।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अव यासीसिष्ठाः। यजिष्ठो वन्हितम ँ शोशुचानों विश्वा द्वेषा ँ सि प्र मुग्ध्यस्मत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ। इह तिष्ठः। अग्नये नमः। सम्पूज्य। मंण्डले सप्रवक्ष्यामि० पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवे।।२।। दक्षिण में असीति जमदग्निऋषिः त्रिष्टुप्छन्दो यमो देवता सदीप दधिभाषभक्त–बलिदाने पूजनें विनियोगः।

ॐ असियमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रि तो गुह्येन व्रतेन असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमेहागच्छ। इहतिष्ठः। यमायै नमः। सम्पूज्य। मंण्डलेसंप्रवक्ष्यामि०पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवे।।३।।

नैऋत्यमे असुन्वतमिति विवस्वान् ऋषिः त्रिष्टुप छन्दो निऋतिदेवता सदीपदधिमाष भक्त बलिदाने पूजनें विनियोग।

ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेनस्येत्या मन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्यानमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ। इहतिष्ठः।

निर्ऋतये नमः। संपूज्य मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० पूरामंत्र बोलकर बलिदान देवे।।४।।

पश्चिम में– तत्वायामिति शुनः शेफ ऋषि त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता सदीप दधिभाषभक्त बलिदानें पूजनें विनियोग।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदासास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानों वरूणेह वोध्युरुषँ स मान आयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणेहागच्छ। इहतिष्ठः। वरुणायनमः। संपूज्य। मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवें।।५।।

वायव्य में–आनो नियुद्धिरिति वशिष्ठ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो वायुर्देवता सदीप दधिमाषभक्त बलिदाने पूजनें विनियोगः।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनिभिरध्वर ँ सहस्त्रिणिभिरूप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिनत्सवने मादयस्व यूयं पात् स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायोइहागच्छ। इहतिष्ठः। वायवेनमः। सम्पूज्य। मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवे।।६।।

उत्तर मे– वयमिति बन्धुऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमो

देवता सदीप दधि माषभक्त बलिदानें पूजने विनियोगः। ॐ वयँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ।। ॐ भूर्भुवः स्वः सोमइहागच्छइहतिष्ठः। सोमाय नमः। सम्पूज्य। मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि०पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवें।।७।।

ईशान में– ईशावास्यमिति गौतम ऋषिः जगतीछन्दः ईशानो देवता सदीपदधिभाषभक्त– बलिदाने पूजनें विनियोगः।।

ॐ ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ। इहतिष्ठः ईशानायनमः। सम्पूज्य।। मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि०पूरामंत्र बोलकर बलिदान देवे।।८।।

ईशान पूर्व मध्य– ब्रह्म जज्ञानमिति गौतम ऋषिः त्रिष्टुप छन्दो ब्रह्मा देवता सदीप दधिभाष भक्त बलिदानें पूजने विनियोगः।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं० ॐ भूभुर्वः स्वः ब्रह्मन इहागच्छ। इहतिष्ठ। ब्रह्मणे नमः सम्पूज्य।। मंण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० पूरा मंत्र बोलकर बलिदान देवें।।६।।

नैर्ऋत्य पश्चिम मध्य–आयंगौरिति सूर्यऋषि गायत्री छन्दो अनन्तो देवता सदीपदधिमाषभक्त–बलिदाने

पूजने विनियोगः।।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छ। इह तिष्ठः। अनंन्ताय नमः। सम्पूज्य। मंण्डलेसम्प्रवक्ष्यामि० पूरामंत्र बोल कर बलिदान देवे।।१०।।

अनेन पूजनेन इन्द्रादि दश दिग्पाल देवता पूजने प्रीयतां इदंन मम्।।

अथ

।। चतुर्द्वार पूजनम्।।

चारों द्वारों पर चार वेदों के पूजन करने का क्रम–

पूर्व में–पूर्वे ऋग्वेदाधिष्ठताय सुदृढ़ तौरणाय नमः। गंगायै नमः। यमुनायै नमः सरस्वत्यै नमः। द्वार श्रियै नमः। द्वार कलशाय नमः। गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि। ऊँ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ऋग्वेदाय नमः।।१।।

दक्षिणमें–दक्षिणे यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः। गंगायै नमः। यमुनायै नमः सरस्वत्यै नमः। द्वार श्रियै नमः। द्वार कलशाय नमः। गंन्धाक्षतं पुष्पं धूप

दीप नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्याय ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा माव स्तेनऽ ईषत माघशँ सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहिः यजुर्वेदाय नमः।।२।। पश्चिम में—सामवेदाधिष्ठताय सुभीम तौरणाय नमः। गंगायै नमः। यमुनायै नमः सरस्वत्यै नमः । द्वार श्रिये नमः। द्वार कलशाय नमः। गंन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानों हव्यदातये निहोता सत्सि वर्हिषिः। पश्चिम सामवेदाय नमः।।३।।

उत्तर में—अथर्ववेदाधिष्ठिताय सुप्रभ तौरणाय नमः। गंगायै नमः। यमुनायै नमः सरस्वत्यै नमः। द्वार श्रिये नमः। द्वार कलशाय नमः। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐशंन्नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्त्रवन्तु नः। अथर्व० वेदाय नमः।।४।।

अथ
।। महाध्वजा पूजनम् ।।

महाध्वजा में हनुमान जी का ध्यान कर पूजन करें।

अतुलित बल धामं हेम शैलाभदेहं

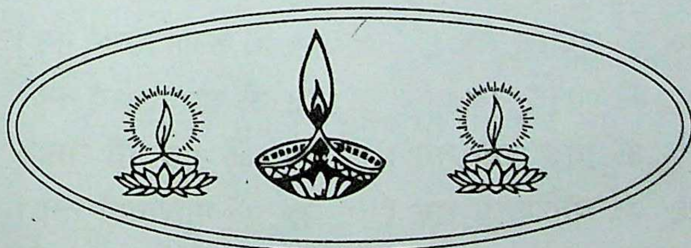
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं।।
सकलगुण निधानं वानराणामधीशं
रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि।।
वन्दे वानरनारसिंह खगराट् क्रीडाश्व वक्त्रान्वितं।
दिव्यालंकरणं त्रिपञ्चनयनं देदीप्यमानं रुचा।।
हस्ताब्जैरसिखकेट पुस्तक सुधाकुम्भां कुशाद्रिं हलं।
खट्वांगं फणिभूरुहं दशभुजं सर्वारि वीरापहम्।।
ॐ अस्में रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः श ँ सते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्मां २ऽ– अवन्तु देवाः।।

ॐ अंजनि सुताय विद्महे वायु पुत्राय धीमहि तन्नो हनुमन्तः प्रचोदयात्

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हनुमतये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना करे–

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये।।



।। अथ चतुः षष्टि योगिनी पूजनम् ।।

यज्ञ मंण्डप के अग्नि कोण में चतुषष्टि योगिनी पूजन करे–

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे।
सखाय ऽइन्द्र मूर्तये चतुः षष्टि योगिनी देव्येभ्योनमः।।

१. ॐ दिव्य योगायै नमः। आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

२. ॐ महायोगायै नमः। ३. ॐ सिद्धि योगायै नमः।
४. ॐ गणेश्वर्यै नमः। ५. ॐ प्रेताक्ष्यै नमः।
६. ॐ डाकिन्यै नमः। ७. ॐ काल्यै नमः।
८. ॐ कालरात्र्यै नमः। ९. ॐ निशाचर्यै नमः।
१०. ॐ हुकार्यै नमः। ११. ॐ शिद्ध वैताल्यै नमः।
१२. ॐ खर्परयै नमः। १३. ॐ भूतयामिन्यै नमः।
१४. ॐ ऊर्ध्व केशे नमः। १५. ॐ विरुपाक्ष्यै नमः।
१६. ॐ शुष्कांग्यै नमः। १७. ॐ मांसभोजिन्यै नमः।
१८. ॐ फैत्कार्यै नमः। १९. ॐ वीरभद्राक्ष्यै नमः।
२०. ॐ धूम्राक्ष्यै नमः। २१. ॐ कलह प्रियायै नमः।
२२. ॐ रक्तायै नमः। २३. ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः।
२४. ॐ विरुपाक्ष्यै नमः। २५. ॐ भयंकर्यै नमः।
२६. ॐ चौरिकायै नमः। २७. ॐ मारिकायै नमः।

२८. ॐ चण्डिकायै नमः। २९. ॐ वाराह्यै नमः।
३०. ॐ मुण्डधारिण्यै नमः। ३१. ॐ भैरव्यै नमः।
३२. ॐ चक्रपाण्यै नमः। ३३. ॐ क्रोधायै नमः।
३४. ॐ दुर्मुख्यै नमः। ३५. ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः।
३६. ॐ कंटक्यै नमः। ३७. ॐ दीर्घलम्बोष्ट्यै नमः।
३८. ॐ मालिन्यै नमः। ३९. ॐ मंत्रयोगिन्यै नमः।
४०. ॐ कालाग्न्यै नमः। ४१. ॐ मोहिन्यै नमः।
४२. ॐ चक्रयै नमः। ४३. ॐ कंकाल्यै नमः।
४४. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः। ४५. ॐ कुण्डलाक्ष्यै नमः।
४६. ॐ जुह्यै नमः। ४७. ॐ लक्ष्म्यैं नमः।
४८. ॐ यमदूत्यै नमः। ४९. ॐ करालिन्यै नमः।
५०. ॐ कौशिक्यै नमः। ५१. ॐ भक्षिण्यै नमः।
५२. ॐ यक्षिण्यै नमः। ५३. ॐ कौमार्यै नमः।
५४. ॐ यन्त्रवाहिन्यै नमः। ५५. ॐ विशालायै नमः।
५६. ॐ कामुक्यै नमः। ५७. ॐ व्याघ्रयै नमः।
५८. ॐ यक्षिण्यै नमः। ५९. ॐ प्रेतभूषण्यै नमः।
६०. ॐ धूर्जट्यै नमः। ६१. ॐ विकटायै नमः।
६२. ॐ घोरायै नमः। ६३. ॐ कपालायै नमः।
६४. ॐ लांगल्यै नमः।। चतुषष्ठि योगिन्यै नमः।।

आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। गन्धाक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

सर्व स्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्य त्राहि नो देवि चतुःषष्टी नमोऽस्तुते।।

चतुः षष्टि योगिनी पूजन करके ईशान कोण में पूर्व लिखी ग्रह पूजा से सूर्यादि नव ग्रहों का पूजनकर लेंवे।।

।। अथ क्षेत्रपाल पूजनम् ।।

यज्ञ मंण्डप के वायव्य कोण में क्षेत्रपाल वेदी बनाकर पूजन करे–

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतार–मग्नेः। एमेनम् बृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः।।

एकोनपंञ्चाशत् क्षेत्रपाल देवताभ्यौ नमः।।

१. ॐ अजराय नमः। आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि
२. ॐ आपकुम्भाय नमः। ३. ॐ इन्द्रस्तुतये नमः।
४. ॐ इडाचाराय नमः। ५. ॐ उक्तसंज्ञाय नमः।
६. ॐ उष्मादाय नमः। ७. ॐ ऋषि सूदनाय नमः।
८. ॐ ऋमुक्ताय नमः। ६. ॐ कृल्प्तकेशाय नमः।
१०. ॐ लृपकाय नमः। ११. ॐ एकद्रष्ट्राय नमः।
१२. ॐ ऐरावताय नमः। १३. ॐ औषधिशाय नमः।

१४. ॐ ओधबन्धवे नमः। १५. ॐ अञ्जनाय नमः।
१६. ॐ अस्त्रवाराय नमः। १७. ॐ कंवलाय नमः।
१८. ॐ खरुरवानलाय नमः। १९. ॐ गामुख्याय नमः।
२०. ॐ घण्टादाय नमः। २१. ॐ ङमनसे नमः।
२२. ॐ चण्डिवारणाय नमः। २३. ॐ छटाटोपाय नमः।
२४. ॐ जटालाय नमः। २५. ॐ झंगिवाय नमः।
२६. ॐ जडश्चराय नमः। २७. ॐ टंकपाणये नमः।
२८. ॐ ठानबन्धवे नमः। २९. ॐ डामराय नमः।
३०. ॐ ढक्कारवाय नमः। ३१. ॐ णवार्णवाय नमः।
३२. ॐ तडिद्देहाय नमः। ३३. ॐ थिराय नमः।
३४. ॐ दन्तुराय नमः। ३५. ॐ धनदाय नमः।
३६. ॐ नतिक्तान्ताय नमः। ३७. ॐ प्रचण्डकाय नमः।
३८. ॐ फट्काराय नमः। ३९. ॐ वीरसंघाय नमः।
४०. ॐ भृंगाय नमः। ४१. ॐ मेघभासुराय नमः।
४२. ॐ युगान्ताय नमः। ४३. ॐ राह्यवाय नमः।
४४. ॐ लम्बौष्ठाय नमः। ४५. ॐ वासवाय नमः।
४६. ॐ शूकनन्दाय नमः। ४७. ॐ षडालाय नमः।
४८. ॐ सुनाम्ने नमः। ४९. ॐ हव्रुकाय नमः।

क्षेत्रपाल देवताभ्यौ नमः।। आवहयामि। स्थापयामि पूजयामि। गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैव्रेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना

भ्राजच्चन्द्र जटाधरं त्रिनयनं निलाज्जनाद्रिप्रभम्।।
दोर्दण्डात्तगदाकपालमरुणस्रग्गन्धवस्त्रोज्वलम्।।
घण्टा मेखल घर्घर ध्वनिलसज्झंकार भीमं विभुं।
वन्दे सहित सर्पकुण्डलंधरं श्री क्षेत्रपालं सदा।।

अथ सरल देव प्रतिष्ठा प्रयोगः

गणपति आद पंञ्चाग देवता पूजन कर के संकल्प करें।

देश कालौ संकीर्त्य विष्णु शिव वा दुर्गादि मूर्तिनां न्यूनतिरिक्त दोष परिहारर्थे देवकलासानिध्यार्थ शिव विष्णु वा दुर्गा प्रतिष्ठा करिष्ये।

।। 'अथ अग्न्युतारणम्' ।।

प्रतिमा (मूर्ति) को निम्न मन्त्रों द्वारा स्नान करवाये पहले—

कुशा के जल से — **पवित्रेस्थोवैष्णव्यो०**

भस्मस्नान—**ऊँ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत०**

मृतिकास्नान—**ऊँ इदं विष्णुर्वि चक्रमे०**

गोमय स्नान—**ऊँ गन्ध द्वारा दुरा०**

पयस्नान—**ऊँ पयः पृथिव्यां पय०**

दधिस्नान– ऊँ दधि क्राव्णो०
मधु स्नान– ऊँ मधु व्वाता ऋतायते०
शक्कर स्नान– ऊँ अपा ँ रस०
घृतस्नान– ऊँ घृतम्भिमिक्षेघृतमस्य०
धान्यस्नान–ऊँ धान्यमसिधिनुहि०
सर्वोषधीस्नान– ॐ ओषधयः समवदन्त०
कुशोदक स्नान–ऊँ देवस्यत्वा सवितुः०

उपरोक्त स्नान करवाकर पुनः विष्णु प्रतिष्ठा में पुरुषसूक्त से शिव प्रतिष्ठा में रुद्र सुक्त से और दुर्गा प्रतिष्ठा में श्री सूक्त से जल धारा दे करके जलाधिवास करे–

पहले जलपूजन करके मूर्ति को जल में रखे। **ऊँ तत्वायामि ब्राह्मणा वन्दमानस्तदासास्ते यजमानों हविर्भिः। अहेडमानों वरुणेह बोध्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः।** वरूण पूजन कर के फिर मूर्ति को जल में सुला देवे। (जल में मूर्ति का वास एक रात्री अथवा समयानुसार रखे) पुन मूर्ति को जल से उठाकर निम्नमंत्र बोले–

ऊँ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरूत्तः सुदानवऽ इन्द्र प्राभूर्भवा सचा।।

घृतादिवास– ऊँ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्ग्घृते

श्रितोघृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतवृषभव्वक्षिहव्यम्।। पुनः घृत से उठाकर मूर्ति को अन्न में रखे। धान्याधिवास– ऊँ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धांदेवोवः सविता हिरण्यपाणि प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेणपाणिना चक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि प्रतिमा को पुनः धान्य से निकालकर पुनः सुन्दर वस्त्रों के भीतर रखे।

सय्याधिवास–ऊँ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथमासदत्स्व वासोऽ अग्ने विश्वरूपँ सव्ययस्व विभावसो।। सय्याधिवास से मूर्ति को उठाकर पुनः निम्न मंत्र बोले– ऊँ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते०।

।। अथप्राणप्रतिष्ठासंकल्प ।।

अथ पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषेण विशिष्ठायां शुभ पुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ मम सकल कुटुम्बानां क्षेम आयु आरोग्य एश्वर्याभिवृध्यर्थ सकल कामना सिध्यर्थ अमुक मूर्तीनां प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये।

मूर्ति पर जल धारा देवे–

ऊँ- समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको

अस्मभ्यँ शिवोभव ।। १।। ऊँ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यँ शिवोभव ।। २।। ऊँ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमनोयज्ञं पावकवर्णँ शिवं कृधि।। ३।। अपामिदंन्ययनँ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यँ शिवोभव।। ४।। अग्नेपावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षिच ।।५।। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवां२ऽइहावह। उपयज्ञँ हविश्चनः।।६।। पावकया यश्चितयत्न्या कृपा क्षामन् रुरूचऽउषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआयोघृणे न ततृषाणोंऽअजरः।। ७।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्पन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यँ शिवोभव।। ८।। नृषदे वेडप्सुषदे बेड् वर्हिषदे बेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट।।६।। ये देवा देवाना यज्ञिया-याज्ञियानाँ संवत्सरीणमुप भागमासते। आहुता दो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।। ये देवा देवस्वधि देवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽ अस्य। येभ्योनऽ ऋते पवते धाम कि चन न ते दिवो न पृथिव्याऽ अधिस्नुषु।।११।। प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्तेऽ

अस्मत्त पन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्य शिवोभव।। १२।।

विनियोग—ऊँ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामाथर्वाणि छन्दासि। क्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजं, ही शक्ति, क्रौं कीलकम्, अस्या नूतन मूर्तौ प्राण प्रतिष्ठापनें विनियोगः। मूर्ति का स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र बोले—

ऊँ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः अस्य मूर्तिनां प्राणाइह तिष्ठन्तु।

ऊं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं क्षं हंसः अस्य मूर्तीना सर्वोन्द्रियाणि तिष्ठन्तु।

ऊं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः अस्य मूर्तीना वाड्मन स्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राण पाणिपाद-पायुपस्थानि इहागत्य चिरं निष्ठन्तु।

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यैप्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायौ मामहेति च कश्चन।।

ऊं मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमि-मन्तनोत्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिमन्द धातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतं भवति।। अब

मूर्ति के कान में गायत्री जपे। अथ नेत्रोन्मीलनम्–ऊं व्रृस्यासिकनीनकश्चक्षु– द्धीऽ असि चक्षुम्मे देहि।। अव नूतन मूर्ति का पूजन षोडशोपचार से कर के नूतन मूर्ति की संस्कार सिद्धि हेतु पन्द्रह बार उं कार बोले। पुनः मूर्तिना जातकर्म्मादि पंञ्चदश संस्कारान् सम्पादये। पुनः प्रार्थना करे– स्वागतं देव देवेश मद्भग्यात्त्वमिहागतः। प्राकृतंत्वम दृष्ट्वा मां वालवत्परिपालयः।।१।। धर्मार्थ कामशिध्यर्थ स्थिरो भव शुभाय नः। सन्निध्यं तु सदा देव स्वार्चाया परिकल्पयः।।२।। भगवन् देव देवश त्वं पिता सर्व देहिनाम् ।येनरूपेण भगवन् त्वयाव्याप्तं चराचरम्।।३।। ज्ञानतोऽ ज्ञानतो वापियावद् विधिरनुष्ठितः। स सर्वस्त्वं प्रसादेन समग्रोभवता ममः।।४।। शुभम्।।

।। अथ विष्णोर्न्यास विधानम्।।

विष्णु याग या प्रष्तिष्ठा में निम्न मंत्रों के द्वारा मूर्ति के अंगों को स्पर्श करे–

अथ अङ्गन्यास–ऊँ सहस्रशीर्षा० –वामकरे। ऊँ पुरुष एवेद ँ सर्व०–दक्षिण करे। ऊँ एतावानस्यमहिमाः०– वामपादे, त्रिपादूर्ध्व० दक्षिणपादे। ऊ ततोविराड़

जायत०— वाम जानु। ऊ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः०— दक्षिणजानु। तत्माघज्ञात्० वामकय्याम् तस्मादश्वा०— दक्षिण कय्याम्। ऊँ तं यज्ञम्०— नाभौ। ऊ यत्पुरुषं व्ददधु०— हृदये। ऊँ ब्राह्मणोस्यमुख०— कंण्ठे। ऊँ चन्द्रमा मनसो०— वामवाहौ। ऊँ नाभ्याआसी०—दक्षिण वाहौ। ऊँ यत्पुरूषेण हविषा०— मुखे। ऊँ सप्तास्या सन्परिधय०— अक्ष्णोः। ऊँ यज्ञेन यज्ञमय जन्त० मूर्ध्नि।। पञ्चाङ्गन्यास—ऊँ अद्भ्यः संभ्भृतः०— हृदये। ऊँ वेदाहमेतम्०— शिरसि। ऊँ प्रजापतिश्चर०— शिखायाम्। ऊँ यो देवेभ्यः०— कवचाय हुम। ऊँ रुचं व्राह्मम्०— अस्राय फट्।

करन्यास— ऊँ ब्राह्मणोस्यमुख०— अंगुष्ठाभ्यांनमः। ऊँ चन्द्रमा मनसो०— तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ नाभ्याआसी०— मध्यमाभ्यांनमः। ऊँ यत्पुषेण हविषा०— अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ सप्तास्यासन्०— कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऊँ यज्ञेनयज्ञमय०— करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।।

।। विष्णु पूजनम्।।

पुष्प लेकर भगवान नारायण (शालिग्राम) का ध्यान करें—

ध्यानम्—नारायणाय सुरमंण्डन मंण्डनाय, नारायणाय सकलास्थितिकारणाय। नारायणाय भवभीति

निवारणय, नारायणाय प्रभवाय नमों नमस्ते।।

ध्येयं सदापरिभवघ्नमभिष्ट दोहं, तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यं। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं, वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाँ सुरे स्वाहा। विष्णवे नमः।।

आवाहनम्। ॐ सहस्राशीर्ष्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिँ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशांगुलम्। आवाहन मुद्रादिखाये।

आसनम्– ॐ पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानों यदन्नेनाति रोहति।।आसन देवें।।

पाद्यम्–ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। पाद्य देवें।।

अर्घ्यम्–ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।। अर्घ्य देवें।।

आचमनीयम्–ॐ ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः।। आचमनी चढावैं।

स्नानिय जलम्–ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं

पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। स्ना० ज० चढ़ावें।

पयस्नानम्– ॐ पयः पृथिव्या पयऔषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। प० स्न्रा० पुनर्जल स्नान करें।

दधिस्नानम्– ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूँ षि तारिषत्।। दधि चढ़ाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

घृत स्नानम्–ॐ घृत घृतपावानः पिवत वसं वसापावानः पिवतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। घृत स्नानंतर पुनः जल से स्नान करावें।

मधुस्नानम्– ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वौषधि।। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां २ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। मधुस्नान कर पुनः जल से स्नान करावें।

शर्करास्नानम्–ॐ अपाँ रसमुद्वयसँ सूर्ये सन्तँ समाहितम्। अपाँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष

ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। शक्कर चढ़ाकर पुनः जल से स्नान करावैं।

पञ्चामृतस्नानम्—ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। पंचामृत चढ़ाकर पुनः जल स्नान करावैं।

वस्त्रम्—तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।। वस्त्र चढ़ावै यज्ञोपवीतम्—तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माजाता अजावयः।। यज्ञोपवीत चढावै।।

चन्दनम्— तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽ अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। चन्दन चढ़ावें।

तिलाक्षतम्—अक्षन्नमिमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत अस्तोषतस्वभानवो विप्रा न विष्ट्या मती यो जान्विन्द्र ते हरिः। तिलाक्षत चढावें।।

पुष्पम्— औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूबरीः। अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। पुष्प चढ़ावें।

तुलसीदलम्— यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् कि म्वाहू किमूरु पादा उच्चेते।। तुलसी चढ़ावें।

धूपम्– ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः उरु तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यांँ शूद्रोअजायत।। धूप दिखावै।।

दीपम्– ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि-रजायत।। दीप दिखावें।

नैवेद्यम्– ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकांऽ अकल्पयन्।। नै० सर्मपण करे।

अखंण्ड ऋतुफलम्– याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वँ हसः।। अखंण्ड फल चढ़ावैं।

ताम्बूलपूगीफलम्– ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वतः वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः। ता० पूंगीफल समर्पण करें।

दक्षिणां–यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।। दक्षिणा चढ़ावैं।

प्रार्थना

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्।।
से भगवान नारायण को पुष्पांञ्जली समर्पण करें।

।। अथ शिव न्यास विधानम्।।

रुद्र याग या प्रतिष्ठा में निम्न मंत्रों के द्वारा मूर्ति के अंगों का स्पर्श करें–

अथङ्गन्यास–ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यव–वामकरे। ॐ या ते रुद्र शिवा०–दक्षिण करे। ॐ यामिषु गिरिशन्त०–वामपादे। ॐ शिवेन वचसात्वा०–दक्षिण पादे। ॐ अध्यवोच दधिवक्ता० वामजानौ। ॐ असौयस्ताम्रो० दक्षिण जानौ। ॐ असौ यो वसर्पति०–वामकट्याम। ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय०–दक्षिण कट्याम्। ॐ प्रमुञ्च धन्वन०– नाभौ। ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो०– हृदये। ॐ याते हेतुर्मीढुष्टम०–वामकुक्षौ। ॐ परिते धन्वनो हेति०–दक्षिण कुक्षौ। ॐ अवतत्य धनुष्टव०–कण्ठे। ॐ नमस्त आयुधाया०– मुखे। ॐ मा नो महन्तमुत०–अक्ष्णो। ॐ मानस्तोके तनये मा न०–मूर्ध्नि। ॐ

षडाङ्गन्यास– ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य०–हृदयाय नमः। ॐ अवोधग्निः समिधा०– शिरसे स्वाहा। ॐ मूर्द्धानंदिवो अरतिं०– शिखायै वष्ट्। ॐ मर्माणिते वर्मणा छादयामि०– कवचाय हुम। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो०– नेत्र त्रयाय वौषट्।

ॐ मानस्तोके तनये मान०– अस्त्रायफट्।

।। शिव पूजनम् ।।

भगवान शिव की मूर्ति या लिंग का पूजन से पहले पुष्प लेकर ध्यान करे–

ध्यायेनित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्ना कल्पोज्वलाङ्गंम्परशु मृगवराभीति हस्तम्प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुममरगणैर्व्याध्रकृत्तिंवसानम्।
विश्वाद्यंविश्व बन्धं निखिलभयहरम्पञ्च–
वक्त्रन्त्रिनेत्रम।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।। रुद्राय नमः।।

पाद्यम्– ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे अथोयेऽअस्य सत्वानोऽ- हन्तेभ्योऽ करंनमः।। ॐ साम्वसदाशिवायनमः पा.स.

अर्घ्यम्–त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृत्।। ॐ सा.शि. अ.सं.।।

आचमनीयम्– ॐ आपो हि ष्ठ्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जेदधातनः। महेरणाय चक्षसे।। योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः।। उशतीरिवमातरः।।

तस्माऽ अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ।। आपोजन यथा च नः।। ॐ सा.शि.आ.स.।। पयस्नानम्–ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।। ॐ सा.शि.प.सं.।। दधिस्नाम्– दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयूँ पितारिषत्।। ॐ सा.शि.द.स।

घृतस्नानम्–घृतम्मिमिक्षेघृतमस्ययोनिर्घृतेक्षितोघृतम्ब–स्यधाम। अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतंवृषभव्वक्षि हव्यम्।। ॐ सा.शि.घृ.स.।।

मधुस्नानम्–मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँरजः।।

मद्युद्यौरस्तुनः पिता।। मधुमान्नोवनस्पतिर्म्मधुमांऽ अस्तु सूर्यः।। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।। सा.शि.म.स.।। शर्करास्नानम् ॐ अपा ँरसमुद्वयसँ सूर्येसन्त ँ समाहितम्।।

अपा ँरसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युतममुपयाम–गृहीतोसिन्द्रायत्वा जुष्ट गृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्राय–त्वाजुष्टतमम्।। सा.शि.श.सं.।।

शुद्धोदकस्नानम्। ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणि–वालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रायपशुपतये

कर्णायामाअवलिप्ता रुद्रानभोरूपाः पार्जन्याः।। सा. शि.शु.स.।।

वस्त्रम्– युवासुवासाः परिवीतऽआगात्स उश्रेयान भवन्ति जायमानः तंधीरासः कवयउन्नयन्तिस्वाध योमनसादेवयन्तः।। सा.शि.व.सं.।।

यज्ञोपवीतम्– यज्ञोपवीतं परम पवित्रम्प्रजापतेर्यत् सहजंपुरस्तात। आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतम्वलमस्तु तेजः।। सा.शि.व.स.।।

सुगन्धिद्रव्यम्–ॐ अहिरिव भौगेः पर्येति वाहुं ज्याया हेतिम्परिवाधमानः। हस्तग्न्घ्रो विश्वावयुनानि व्विद्वान पुमान् पुमाँ सम्परिपातु व्विश्वतः।। सा.शि.सु.सं.।।

भस्मलेपनम्–प्रसद्यभस्मनायोनिमपश्चपृथिवींमग्ने। सँ सृज्य मातृ भिष्ट्वं ज्यो तिष्मान्पुनरासदः।। सा.शि.म.स.।। चन्दनम्–त्वाङ्गन्धर्व्वाऽ अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्वृहस्पतिः। त्वामोषघेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्माद मुच्यद।। सा.शि.च.स.।। अक्षतम्–अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषतः। अस्तोषतस्वभानवोव्विप्रानविष्ठयामतियोजान्विद्रतेहरी।। सा.शि. अ.सं.।। पुष्पम्–ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽ इवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।। सा.शि.पु.सं.।। विल्वपत्रम्– नमो विल्मिने च कवचिने

च नमो वर्मिणे च वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ।। सा.शि. वि.स.।।

धूपम्–ॐ धूरसिधूर्व्वंधूर्व्वन्तंधूर्व तं योऽस्मान्धूर्व्वति तं धूर्व्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसिब्वह्नितम ँ सस्नितमम्पप्रितमजुष्टतमन्देवहूतमम्।। सा.शि.धू. आध्रापयामि।।

दीपम्– ॐ अग्निज्ज्योतिज्जर्योतिरग्निः स्वाहासूर्योज्ज्योर्तिज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्योव्वर्च्योज्योति र्व्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्योज्योतिः स्वाहा।। सा. शि.दी. दर्शयामि।। हस्तप्रक्षालनम्।। नैवेद्यम्– ॐ अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिषऽ उर्ज्जेनोधेहिद्विपदे चतुष्पदे।। सा.शि.नै. स.।। दक्षिणाम्–ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम।। सा.शि.द.स.।।

फलम्–ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

वृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व ँ हसः।। सा.शि.फ.स।।

निराजनम्–आ रात्रिपार्थिव ँ रजः पितुरप्रायिधामभिः।

दिवः सदाँ सि वृहती व्वितिष्ठसऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः।। सा.शि.नि.स.।।

प्रार्थना– शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं।

शूलं वज्रं च खड्ंग परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।।

नागं पाशं च घण्टा डमरुकसहितं सांकुशंवामभागे।

नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

।। अथ दुर्गा न्यास विधानम्।।

दुर्गायाग या प्रतिष्ठा में निम्न मंत्रों द्वारा पहले मूर्ति के अंगो का स्पर्श करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणी०– शिरसि। ॐ ताम्ऽआवह जातवेदो०नेत्रयोः। ॐ अश्वपूर्वांरथमध्यां०– कर्णयोः। ॐ कांसोस्मितां हिरण्य०–घ्राणयो। ॐ चद्रां प्रभासां यशसा०–मुखे। ॐ आदित्यवर्णे तपसो०–ग्रीवायाम्। ॐ उपैतु मां देवसखः०–हस्तयो। ॐ क्षुत्पिपासमलां०– हृदये। ॐ गन्धद्वारादुराधर्षां०– नाभौ। ॐ मनसः काममा० गुह्ये। ऊँ कर्दमेन० गुदे। आपः सृजन्तु०–उर्वो। ॐ आर्द्रां पुष्कारिणीं पुष्टि०– जानुनोः। आर्द्रां यः० जंघयोः ॐ ताम्य आवह०

चरणयोः। ॐ यः शुचिः प्रयतो०– सर्वाङ्गे।

षडाङ्गन्यास–ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम। ॐ विच्चे नेत्र त्रयाय बषट्। ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

।। दुर्गा पूजनम्।।

एह्येहि दुर्गे! दुरितौघनाशिनिः प्रचण्डदैत्यौघ–विनाशकारिणी।
उमा महेशार्द्ध शरीरधारिणी स्थिराभवत्वंमम यज्ञकर्मणि।।

मां दुर्गा को पुष्प चढ़ाकर निम्न मंत्रों से पूजन करें–

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकंमऽइषाण।।

आवाहनम्–ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। दुर्गादेव्यै नमः आ.स.।।

आसनम्–तांऽ आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। दुर्गादेव्यै नमः आ.स.।। पाद्यम्–अश्वपूर्वारथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम्।

श्रियं देवि मुपह्वेश्रीर्मादेवी जुषताम्।। दुर्गा देव्यैनमः पा.स.।। अर्घ्यम्– कांसोऽस्मितांहिरण्यप्रकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतपर्यन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्।। दुर्गा देव्येनमः अ.सं.।। आचमनीयम्– चन्द्राप्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तांपद्मनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। दुर्गा देव्यै नमः आ.सं।। पयस्नानम्– कामधेनु समुत्पनं सर्वेषां जीवनं परम्। पवित्रं तव हेतुश्च पयस्नानं मयार्पितम्।। दुर्गादेव्येनमः। प.स.।। दधिस्नानम्–पयसस्तु समुद्भूतंमधुराम्लं शशि प्रभम्। दध्यानीत्तंमयादेवि स्नानार्थं सुरेश्वरी।। दुर्गा देव्यै नमः द.स.।। घृत स्नानम्–नवनीत समुत्पनं सर्व संतोष दायकम्।

धृततुभ्यं प्रदास्यामि गृहाणं जगदम्बिका।। दुर्गा देव्यै नमः। घृ.सं.।।

मधुस्नानम्– नाना पुष्पं समुद्भूतं सुस्वादु मधुर मधु। तेजः पुष्ठिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। दुर्गा देव्यैनमः म.स.।।

शर्करास्नानम्–इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्। दुर्गादेव्येनमः श.स.।।

पंञ्चामृतस्नानम्– उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह।
प्रादुर्भूतो स्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु में।। दुर्गा देव्यै नमः पं०स०।।

गन्धोदकस्नानम्–गन्धद्वारां दिुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। दुर्गा देव्यैनमः ग.सं.।।

उद्वर्तनस्नानम्–ॐ अँ शुनाते अँ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।। दुर्गा देव्यै नमः उ० स्ना० स।।।।

शुद्धोदकस्नानम्– ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽ रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। दुर्गा देव्यै नमः शु.स.।। वस्त्रम्–ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्त्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्तांश्चक्रे व्वायव्व्या नारण्या ग्ग्राम्याश्चये।। दुर्गा देव्यै नमः व.स.।।
उपवस्त्रम्–क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद में गृहात्। दुर्गा देव्यै नमः उ.व.स.।।
गन्धम्–ॐ त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वांवृहपतिः। त्वामोषधेसोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद मुच्यत्।। दुर्गा

देव्यैनमः ग.सं.।।
सिन्दूरम्–ॐ अहिरिव भोगेः पर्य्येति वाहुं ज्याया हेतिप्परिवाधमानः। हस्तन्धो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्द्वान् पुमान्नपुमाँ संप्परि पातु विश्वतः।। दुर्गा देव्यै नमः सिन्दूरं समर्पयामि।।
अक्षतम्– अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।। दुर्गा देव्यै नमः अ.सं.।। पुष्पम्--मनसः काममांकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।। दुर्गा देव्यै नमः पु.सं.।। कज्जलम्–चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्ये सुभगे शान्तिकारके। कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेंश्वरी।। दुर्गा देव्यै नमः क.सं.।। सुगन्धिद्रव्यम्–चन्दनागरू कर्पूरं कुंकुमंरोचनं तथा। कस्तूर्यादि सुगन्ध्याच सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।। दुर्गा देव्यै नमः सु.द्र.स.।। अवीर गुलालम्–अवीर गुलालं परिद्रव्यै निर्मितं चूर्ण उत्तमम्। अबीर नामक चूर्णं गन्धचारूपगृह्यताम्।। दुर्गा देव्यै नमः।अ.गु.स.।। आभूषणं–स्वभाव सुन्दराङ्गायै नाना देवा श्रये शुभा। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यस्तव अर्चये।। दुर्गा देव्यै नमः आ.स.।। हारकंकण–हार कंकण केयूर मेंखलाे कुण्डलादिभि। रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। दुर्गा देव्यैनमः हा.क.स।। धूपम्-

दशाङ्गगुगुलं धूपं चन्दनाऽगरुसंयुतम्। समर्पित मया देवि गृह्यताम परमेंश्वरी।। दुर्गा देव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि।। दीपम्–घृतवर्ति समायुक्त महातेजोमहाज्वलम्। दीप दास्यामि देवेशी सुप्रीता भव सर्वदा।। दुर्गा देव्यै नमः दी. दर्शयामि।।

नैवेद्यम्–अन्नंचतुर्विधं स्वादुः रसै षडभि समन्वितं। नैवेद्यं गृहतां देवि भक्ति में ह्यचलां कुरू।। दुर्गा देव्यै नमः नै.स.।। नैवेधान्ते आचमनीयं। दक्षिणाम्–ॐ हिरण्यगर्भ्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। दुर्गा देव्यै नमः दक्षिणाम् समर्पयामि।

फलम्– फलेन फलितं देवित्रैलोक्यं स चराचरम्। तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णासन्तु मनोरथः।। दुर्गा देव्यै नमः फ.सं.।। ताम्बूलम्–एला लवंङ्ग कस्तूरी कर्पूरे पुष्प वासितम्। वीटिकां मुख वासार्थ अर्पयामि सुरेश्वरी।। दुर्गादेव्यैनमः ता.सं.।।

छत्रम्– ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोंऽ स्मिनायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।। दुर्गादेव्यै नमः छत्रम् अर्पयामि।।

चामरम्–अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः। वाजसनिँ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेही यशसं

वृहन्तम्। दुर्गा देव्यै नमः चा.स.।। दर्पणम् ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः। अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमा शम्यन्तु शम्यन्तिः।।दुर्गा देव्यै नम। द. दर्शयामि।।

कर्पूरार्तिकम्—निराजनं सुमांगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्। चन्द्राऽर्क वन्हि सदृशं महादेवि नमोऽस्तुते।। दुर्गा देव्यै नमः क.सा.।।

प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसिभीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्य दुःख—भय—हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदाऽ र्द्रचिता।। सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते।।

।। सर्वतोभद्र देवता स्थापनम्।।

यज्ञ मण्डप में भद्र के उपर निम्न देवताओं का आवाहन करे—

१. ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि २. ॐ सोमाय नमः। ३. ॐ ईशानाय नमः। ४. ॐ इन्द्राय नमः। ५. ॐ अग्नयेनमः ६. ॐ यमायनमः।

७. ॐ नैर्ऋत्यायनमः ८. ॐ अरुणाय नमः। ६. ॐ वायवे नमः १०. ॐ अष्टवसुभ्यः नमः। ११. ॐ एकादश रुद्रेभ्योनमः १२. द्वादशादित्येभ्यः नमः। १३. अश्विभ्यानम्। १४. ॐ विश्वेदेवेभ्यः नमः। १५. ॐ पितृभ्यनमः, १६. ॐ यक्षेभ्यनमः। १७. ॐ भूतनागेभ्यनमः। १८. ॐ सर्पेभ्यनमः। १६. ॐ गन्धर्वेभ्यः नमः। २०. ॐ अप्सरोभ्यनमः। २१. ॐ स्कंन्दाय नमः। २२. नन्दीश्वराय नमः। २३. शूलमहाकालाभ्यां नमः। २४. ॐ प्रजापतिभ्य नमः। २५. ॐ दुर्गायैनमः। २६. ॐ विष्णवे नमः। २७. ॐ पितृभ्यनमः। २८. ॐ मृत्युरोगेभ्य नमः। २६. ॐ गणपतये नमः। ३०. ॐ मरुद्भ्यः नमः। ३१. ॐ पृथिव्यै नमः। ३२. ॐ अदभ्यः नमः। ३३. ॐ सरिदभ्यः नमः। ३४. ॐ सप्तसागरेभ्यः नमः, ३५. ॐ मेरवे नमः, ३६. ॐ गदायैनमः। ३७. ॐ त्रिशूलाये नमः। ३८. ॐ वज्रायनमः। ३६. ॐ शक्तये नमः। ४०. ॐ दण्डायनमः, ४१. ॐ खड्गाय नमः। ४२. ॐ पाशाय नमः। ४३. ॐ अंकुशाय नमः, ४४ ॐ गोतमाय नमः। ४५. ॐ भारद्वाजाय नमः। ४६. ॐ विश्वामित्राय नमः। ४७. ॐ कश्यपाय नमः। ४८. ॐ

जमदग्नये नमः। ४६. ॐ वशिष्ठाय नमः। ५०. ॐ अत्रयेनमः ५१. ॐ अरुन्धत्यैनमः। ५२. ॐ एन्द्रयैनमः। ५३. ॐ कौमार्ये नमः। ५४. ॐ ब्राह्मयै नमः। ५५. ॐ चामुण्डायै नमः, ५६. ॐ वैष्णव्येनमः। आवाहयामि स्थापयामि गंन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामिं।।

चतु

।। लिंगतो भद्र देवता स्थापनम्।।

यज्ञ मंण्डप में लिंगतो भद्र के उपर निम्न देवताओं का आवाह्न कर पूजन करें।

१. ॐ वीरभद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि। पूजयामि। २. ॐ शंभवेनमः। ३. ॐ अजैकपदे नमः। ४. ॐ अहिर्वुध्न्याय नमः। ५. ॐ पिनाकिने नमः। ६. ॐ शूलपाणिनेनमः। ७. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः। ८. ॐ कपालिने नमः। ६. ॐ दिक्पतयेनमः, १०. ॐ रुद्रायनमः। ११. ॐ शिवायनमः, १२. ॐ महेश्वराय नमः। १३. ॐ असितांग भैरवाय नमः। १४. ॐ सूरुभैरवाय नमः। १५. ॐ चंण्डभैरवाय नमः। १६. ॐ क्रोध भैरवाय नमः। १७. ॐ उन्मत भैरवायनमः, १८. ॐ कपाल भैरवाय नमः।

१९. ॐ भीषण भैरवाय नमः। २०. ॐ संहार भैरवाय नमः। २१. ॐ भवाय नमः। २२. ॐ शर्बायनमः। २३. ॐ रुद्रायनमः। २४. ॐ पशुपतये नमः। २५. ॐ महते नमः। २६. ॐ भीमाय नमः। २७. ॐ ईशानाय नमः। २८. ॐ अनन्ताय नमः। २९. ॐ तक्षकाय नमः। ३०. ॐ वासुकयेनमः, ३१. ॐ कुलिशाय नमः, ३२. ॐ कर्कोटकाय नमः। ३३. ॐ शंखपालाय नमः। ३४. ॐ कम्बलाय नमः। ३५. ॐ अश्वतराय नमः। ३६. ॐ शूलिनेनमः। ३७. ॐ चन्द्रमौलये नमः। ३८. ॐ चन्द्रमसेनमः। ३९. ॐ वृषभध्वजाय नमः। ४०. ॐ त्रिलोचनाय नमः, ४१. ॐ शक्तिधराय नमः। ४२. ॐ महेश्वराय नमः। ४३. ॐ शूलधारिणे नमः, ४४. ॐ स्थाणवे नमः। ४५. ॐ ब्रह्मणे नमः। ४६. ॐ सोमाय नमः। ४७. ॐ ईशानाय नमः। ४८. ॐ इन्द्रायनमः। ४९. ॐ अग्नयेनमः। ५०. ॐ यमायनमः। ५१. ॐ निऋतये नमः। ५२. ॐ वरुणाय नमः। ५३. ॐ वायवेनमः, ५४. ॐ अष्टवसुभ्योनमः, ५५. ॐ एकादश रुद्रेभ्योनमः। ५६. ॐ द्वादशादित्येभ्योनमः। ५७. ॐ अश्विभ्यांनमः, ५८. ॐ विश्वेदेभ्योनमः। ५९. ॐ सप्तयक्षेभ्योनमः, ६०. ॐ भूतनागेभ्योनमः, ६१. ॐ गन्धर्वाप्सरेभ्योनमः। ६२. ॐ स्कंदायनमः। ६३. ॐ नन्दीश्वरायनमः। ६४. ॐ शूलमहाकालेभ्यो

नमः। ६५. ॐ दक्षादिसप्तकायनमः। ६६. ॐ दुर्गायैनमः। ६७. ॐ विष्णवे नमः। ६८. ॐ स्वधायै नमः। ६९. ॐ मृत्युरोगेभ्योनमः। ७०. ॐ गणपतये नमः। ७१. ॐ अदभ्यांनमः। ७२. ॐ मरुद्भ्योनमः। ७३. ॐ पृथिव्यैनमः। ७४. ॐ गंगादिनदीभ्योनमः। ७५. ॐ सप्त सागरेभ्योनमः। ७६.ॐ मेरवेनमः। ७७.ॐ सद्यौजातायनमः। ७८. ॐ वामदेवाय नमः। ७९. ॐ अघोरायः नमः। ८०. ॐ तत्पुरुषाय नमः। ८१. ॐ ईशानाय नमः। ८२. ॐ परिधये नमः। ८३. ॐ चतुः पुरिभ्यो नमः। ८४. ॐ ऋग्वेदाय नमः। ८५. ॐ यजुर्वेदायनमः। ८६. ॐ सामवेदाय नमः। ८७ॐ अथर्ववेदाय नमः। ८८. ॐ भवायनमः। ८९. ॐ शर्वायनमः। ९०. ॐ पशुपतयेनमः। ९१. ॐ ईशानाय नमः। ९२. ॐ उग्राय नमः। ९३. ॐ रुद्रायनमः ९४. ॐ भीमायै नमः। ९५. ॐ महत्यैनमः। ९६.ॐ पृथ्वीतत्वायनमः। ९७. ॐ जलतत्वाय नमः। ९८. ॐ तेजस्तत्वाय नमः। ९९. ॐ वायु तत्वायनमः, १००. आकाशतत्वायनमः। १. ॐ गदायैनमः, २. ॐ त्रिशूलाय नमः, ३. ॐ वज्रायनमः। ४. ॐ शक्तयेनमः। ५. ॐ दण्डायनमः। ६. ॐ खड्गायनमः। ७. ॐ पाशायनमः। ८. ॐ अंकुशाय नमः। ९. ॐ गौतमाय नमः। १०. ॐ भरद्वाजाय नमः। ११. ॐ विश्वामित्राय नमः।

१२. ॐ कश्यपाय नमः। १३. ॐ जमदग्नये नमः। १४. ॐ वशिष्ठाय नमः। १५. ॐ अत्रयेनमः। १६. ॐ अरुन्धत्यै नमः। १७. ॐ एन्द्रयै नमः। १८. ॐ कौमार्यैनमः। १६. ॐ ब्राह्मये नमः। २०. ॐ वाराह्ये नमः। २१. ॐ चामुण्डायैनमः। २२. ॐ वैष्णब्यैनमः। २३. ॐ माहेश्वर्ये नमः। २४. ॐ वैनायिक्ये नमः। २५. ॐ भवान्ये नमः। २६. ॐ सर्वाण्ये नमः। २७. ॐ रुद्राण्यै नमः। आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि गन्धाक्षतंपुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणा च समर्पयामि।

।। एकलिंगतोभद्र स्थापनम्।।

१. ॐ असितांग भैरवायनमः। आवाहयामि स्थापयामि। पूजयामि। २. ॐ रूरू भैरवाय नमः। ३. ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ४. ॐ क्रोध भैखायनमः। ५. ॐ उन्मत भैरवायनमः। ६. ॐ कपाल भैखायनमः। ७. ॐ भीषण भैरवायनमः। ८. ॐ संहारभैरवायनमः। ६. ॐ भवायनमः। १०. ॐ शवार्यनमः। ११. ॐ पशुपतये नमः। १२. ॐ ईशानाय नमः। १३. ॐ रुद्रायनमः। १४. ॐ उग्राय नमः। १५. ॐ भीमायनमः। १६. ॐ महतेनमः। १७. ॐ अनन्ताय नमः। १८. ॐ वासुकये नमः। १६. ॐ तक्षकायनमः। २०. ॐ कुलिशाय नम। २१. ॐ कर्कोटकाय नमः। २२. ॐ शंखपालाय

नमः। २३. ॐ कम्बलाय नमः। २४. ॐ अश्वतराय नमः। २५. ॐ शूलायनमः। २६. ॐ चन्द्रमौलिनेनमः। २७. ॐ चन्द्रमसेनमः। २८. ॐ वृषभध्वजाय नमः। २६. ॐ त्रिलोचनाय नमः। ३०. ॐ शक्तिधराय नमः। ३१. ॐ महेश्वराय नमः। ३२. ॐ शूलपाणये नमः। आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

।। श्रीयन्त्रस्थ देवता स्थापनम् ।।

१. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि। २. श्रीमहाकाल्यै नमः। ३. महा लक्ष्म्यै नमः, ३. महासरस्वत्यै नमः। ४. त्रिगुणात्मिकायैनमः। ५. दुर्गादेव्ये नमः। ६. गुरुवे नम। ७. परात्परगुरवेनमः। ८. परमेष्ट गुरवे नमः। ६. गुरुपक्तये नमः, १०. ऐं हृदयाय नमः। ११. ॐ ह्रीं शिरसे नमः, १२. क्लीं शिखायैनमः। १३. चामुण्डाये कवचाय नमः। १४. विच्चे नेत्रत्रयाय नमः। १५. ॐ ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै अस्त्राय नमः।१६. स्वरया सह विधात्रे नमः। १७. श्रिया सह विष्णवे नमः। १८. उमया सह शिवाय नमः। १६. हुं सिंहाय नमः। २०. हुं महिषाय नमः। २१. ऐं नन्दजायै नमः।

२२. ह्री रक्त दन्तिकायै नमः। २३. क्लीं शाकम्भर्यैनमः,। २४. दुं दुर्गायै नमः। २५. हुं भीमाय नमः। २६. ह्रीं भ्रामर्यै नमः। २७. ऐं ब्राह्मयै नमः। २८. ह्रीं माहेश्वर्यैनमः। २९. क्लीं कौमार्यै नमः। ३०. ह्रीं वैष्णव्यै नमः। ३१ हुं वाराह्यै नमः, ३२. ॐ ह्रीं नारसिंहयै नमः ३३. लं एन्द्रयै नमः। ३४. ॐ स्फ्रे चामुण्डायै नमः। ३५. ॐ विं विष्णु मायायै नमः, ३६. चें चेतनायै नमः। ३७. बुं बुध्यै नमः। ३८. निं निन्द्रायै नमः, ३९. क्षुं क्षुधायै नमः, ४०. छां छायायैनमः ४१. शं शक्तये नमः ४२. तृं तृष्णायैनमः, ४३. क्षां क्षान्त्यै नमः, ४४. जां जात्यैनमः, ४५. लं लज्जायै नमः। ४६. शां शान्त्यै नमः। ४७. श्रं श्रद्धायैनमः। ४८. कां कान्त्यै नमः। ४९. लं लक्ष्म्यै नमः। ५०. धृं धृत्यै नमः। ५१. वृं वृत्यै नमः। ५२. श्रुं श्रुत्येनमः। ५३. स्मृं स्मृत्यै नमः। ५३. दं दयायै नमः ५४. तुं. तुष्ट्यै नमः। ५५. पुं पुष्ट्यैनमः, ५६. मां मातृभ्योनमः, ५७. भ्रां भ्रान्त्यैनमः, ५८. गं गणपतये नमः, ५९. क्षं क्षेत्रपालाय नमः। ६०. वं वटुकाय नमः। ६१. यां योगिन्यै नमः, ६२. इन्द्रायनमः, ६३. अग्नयेनमः, ६४. यमायनमः। ६५. नित्रृतयेनमः। ६६. वरूणाय नमः। ६७. वायवे नमः, ६८. सोमाय नमः, ६९. ईशानाय नमः, ७०. ब्रह्मणे नमः, ७१. अनन्ताय नमः, ७२. वज्राय

नमः। ७३ शक्तयेनमः ७४. दण्डाय नमः। ७५. खंड्गाय नमः। ७६. पाशाय नमः, ७७. अंड्कुशायनमः, ७८. गदायै नमः। ७९. त्रिशूलाय नमः।८०. पद्मायनमः। ८१. चक्राय नमः। ८२. कादम्बरी देव्यै नमः। ८३. उल्का देव्यै नमः, ८४. कराली देव्यै नमः, ८५. रक्ताक्षी देव्यैनमः। ८६. श्वेताक्षी देव्यै नमः ८७. हरिताक्षी देव्यै नमः। ८८. यक्षिणी देव्यै नमः। ८९. काली देव्यै नमः। ९०. सुरज्येष्टा देव्यै नमः, ९१. सपर्राज्ञी देव्यैनमः।। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देव्यै नमः सर्वोपचारार्थे आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि गंन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य दक्षिंणा च समर्पयामि।

।। अथ यज्ञ कुण्ड पूजनम्।।

ॐ विष्णुः ३ नमः परमात्मने० पुर्वोक्त गुण विशषेण विशिष्ठायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक...कर्मणि। अग्निस्थापनं मेखलायोनि–कण्ठ नाभि जिह्वा प्रभृति देवताना स्थापनं पूजनमहं करिष्ये वा करिष्यामहे। पञ्चगव्येन कुण्ड प्रोक्षणम्–ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ

आपो जनयथा च नः।।

प्रथम मेखला विष्णु पूजनम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

मध्य मेखला ब्रह्मा पूजनम्—ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः। सुरोचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।। ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

तृतीय मेखला रुद्रपूजनम्—नमः, शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। रुद्राय नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

गौरी पूजनम्— ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिन्नीम्।। गौर्येनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

कुण्ड योनि पूजनम्— ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसिं मा त्वा हि ँ सीन्मामाहि ँ सीः।। कुण्ड योन्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। पूजयामि।।

कण्ठपूजनम्—ॐनीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्बाऽअधः क्षमाचराः तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

कण्ठेरुद्रायनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
नाभि पूजनम्– ॐ नाभिर्मे चितं विज्ञानं पायुर्मेऽपचतिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ में भगः सौभाग्यं पसः।।
नाभ्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि। पूजयामि।

अथपञ्चभू संस्कार– हस्तमात्र–परिमिता चतुरस्रां भूमि कुशै परिसमुह्य तान कुशानैशान्या परित्यज्य। गोमयोदकेनोपलिप्य। स्रुवमूलेन प्रागग्रं प्रादेशमात्रः उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखन क्रेमेणैव अनामिका अंगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्या दिशि परित्यज्य। तत उदकेन अभ्युक्षणम्।।

अग्निस्थापनम्–कांस्यपात्रे आह्वत अग्निं स्वाभिमुखं कुण्डे निदध्यात्। अनीताग्नि पात्रे किंचित अक्षतादि प्रक्षेपः।।

अग्निस्थापन मंत्र– ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे देबाँ २ आसादयादिह।।

अग्नि ध्यायेत्– ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयोअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्यत्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां आविवेश।। ॐ भूर्भुवः स्वःअग्ने वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र भूमिमातः वरुण पितः मेषध्वजः मम सम्मुखो भवः।।

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मा स्थापनम्– ॐ ब्रह्मजज्ञानं

प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमांऽ—अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ब्रह्मणेनमः सर्वोपचारार्थे गधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

ततः प्रणिता पात्रं वारण काष्टमयं द्वादशगुलोच्चं चतुरगुल मध्य रवातं पद्माकृतिं पुरतो निधाय जलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखम् अवलोक्य अग्नेरुतरतः कुशोपरिनिदध्यात्। वर्हिषापरिस्तरणम्—वर्हिर्नाम्नामे—काशीतिदर्भदलानां चतुर्भागं कृत्वा यथा एकेन दर्भेण शून्य हस्तोन भवति। प्रथम भागमादाय आग्नेयाद् ईशानांतम् १ द्वितीय भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् २ तृतीय भाग मादाय नैऋत्याद्वायव्यान्तम् ३ चतुर्थ भागमादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्।।४।। ततो

अग्निजिह्वा नामानि— कराली धूमिनीं श्वेत्ता लोहिता नील लोहिता। सुवर्णा पद्मरागाश्च सप्तजिह्वा विभावसौ।।

दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः।
तेषां संरक्षणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।।
पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्तो महासुरः।
व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम्।।

अग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थ कुशत्रयं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जन कुशाः, पञ्चउपयमन कुशाः, समिधस्तिस्रः प्रादेशमात्र्या, स्रुव, आज्यं, षट्पञ्चाशदुत्तरशतद्वय मुष्ट्यवच्छिन्नं तण्डुल पूर्णपात्रं, पवित्र द्देदनकुशानां पूर्वपूर्वक्रमेणैता— न्यासादनीयानि। त्रिभिः पवित्रच्छेदनकुशैर्द्वे पवित्रेछित्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रि प्रोक्षणी पात्रे निधाय प्रोक्षणी। पात्रम् वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रोक्षणी पात्रम् आकाशस्थ प्रणीतोदकेना पूरयेत्। भूमौपतित चेत्तदा प्रायश्चितं गोदानम्। ततः प्रोक्षणी जलेन यथा सादितवस्त्वनुरुपं सेचनम्। ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्।

आज्यास्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुपात्रे चरु प्रक्षेपः। ततः ईशान दिग्भागे रुद्र कलश पूजनम्। ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषाँ सहस्रायोजने

वन्हिवास—वर्तमान तिथि में १ जोड़कर वार जोड़ना योग में ४ का भाग देना।१/३ शेष रहने पर अग्नि का वास पृथ्वी में होता है होम कार्य करने पर सिद्धि होगी २ अथवा १ शेष रहे तो अग्नि का वास पृथ्वी में नहीं होमादि कर्म में प्राणधनादि नाश होगा।

वधन्वानि तन्मसि।। रुद्र कलश देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीपं नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

ततो ज्वलतृणमवदाय आज्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ततः स्रुव प्रतपनं कृत्वा संमार्जनकुशैः स्रुव मार्जनम्– मूलेन मूलं मध्येनः मध्यं अग्रेणाग्रम्। पुनः परितप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात्। ततः आज्यं प्रतपनः उत्पवनम्

कृत्वा तदवेक्षणम्, अपद्रव्य निरसनञ्च। ततः उपयमन कुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्निपर्युक्षणं कृत्वा उतिष्ठन् मनसाप्रजापतिम् ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ता समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्। ततः उपविश्य सपवित्र

हवन चक्र आहुति विचार–

ग्रह	नक्षत्र	फलम्	यात्रा विवाहौव्रत गोचरेषुः चौलोपनीताथ–
सूर्य	३	अशुभ	खिल व्रतेषु। दुर्गा विधानेषु सुत प्रसूतौ
बुध	३	शुभ	नैवाग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम्।।
शुक्र	३	शुभ	सूर्य के नक्षत्र से ३/३ गिनकर
शनि	३	अशुभ	चन्द्र नक्षत्र तक क्रमशः सूर्य बुध
चन्द्र	३	शुभ	शुक्र शनि चन्द्रमां मंगल बृहस्पति
भौम	३	अशुभ	राहु केतु के मुख की आहुति होती है।
गुरु	३	शुभ	शुभाशुभ चक्र से ज्ञात करे।
राहु	३	अशुभ	
केतु	३	अशुभ	

प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य, पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ श्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्। आहुतिचतुष्टये स्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।

बिना अन्वारब्ध के एक आहुति–

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये इदं नममः।। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुव स्वाहा, इदं वायवे न ममः ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। एता महाव्याहृतयः।

अब गायत्री मंत्र से घी की आहुति दे– ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात। ॐ स्वाहा।

अथ अग्नि पूजनम्

ध्यानम्– ॐ रुद्रतेज समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्।
स्रुच स्रुवं च शक्तिं चाप्यक्षमालां च दक्षिणै।।
तोमरं व्यजनं चैव घृत पात्रं तु वामकै।
विभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्त जिह्वकम्।।
दक्षिणं च चतुर्जिह्व द्विजिह्वं चोतरमुखम्।
कोटि द्वादश मूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत् कलायुतम्।

स्वाहास्वधावषट्कारैरंकितं मेषवाहनम्।।
रक्तमाल्यांम्बरं रक्तं रक्त पद्मासन स्थितम्।
रौद्रं वागीश्वरी रुपं वह्निं आवाहयाम्यहम्।।
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरमितद्युते।
आगच्छ भगवन् अग्ने यज्ञे स्मिन्सन्निधौ भवः।।
अग्नये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ अग्नि दूतं पुरादधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।
देवाँ २ ऽ आ सादयादिह।। अग्नये नमः गन्धाक्षतं
पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।
नमस्करोमि। ततः अग्नेः सप्त जिह्वानां पूजनम्।
ॐ कनकायै नमः, ॐ रक्तायै नमः, ॐ कृष्णायै नमः, ॐ उद्गारिण्यै नमः, ॐ उतरमुखे सुप्रभायै नमः, ॐ बहुरुपायै नमः, अतिरिक्तयै नमः आवाहयामि स्थापयामि गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्ययामि।।

।। हवनम्।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रो अमुकनामाहं सकुटम्बस्य सपरिवारस्यात्मनः सर्वाभीष्ट फल प्राप्त्यर्थ अमुक यज्ञ कर्मणा श्री सूर्यादि नवग्रहादीनां अधिदेवता प्रत्याधि देवता पंञ्च लोकपाल देवता वास्तु देवता षोडष

स्तंभ देवता दश दिग्पाल देवता चतुर्वेद चतुःषष्टि योगिन्या क्षेत्रपाल देवतानाममुक प्रधान देवता सहितानां च प्रीतये यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यै हवन स्वयं ब्राह्मण द्वारा वा करिष्ये।

।। अथ पंञ्च वारुणी होमः ।।

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्यविद्वानदेवस्यहेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्। स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्याम्० ॐ स त्वन्नो अग्नेऽ वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्व नोव्वरुण ँरराणो वीहि मृडीक ँसुहवो नएधि स्वाहा।। इदमग्नि वरुणाभ्या०।। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यन भिशस्तिपाश्चसत्व मित्वमयाऽ असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये। ऊँ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः। तेंभिनौऽअद्य-सवितोतविष्णु र्विश्वेमुञ्चतुमरुतः स्वर्का स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः-श्वर्केभ्य स्वाहा ॐ उदुतमं वरुण पाशमस्मदवाध-मंविमध्यमँ श्रथाय। अथाव्वय मादित्य व्रते तवानाग-सोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाया दित्याया दितये०। अत्रोदकस्पर्शः इतिपञ्चवारुणीहोमः।।

अथ नवग्रहाणां होमः

ॐ आ कृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। सूर्याय नमः ॐ स्वाहा।।

ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा।। चन्द्राय नमः ॐ स्वाहा।। ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपा ँरेतासि ँजिन्वति।। भौमायनमः ॐ स्वाहा।। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेस ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।। बुधाय नमः ॐ स्वाहा।। ॐबृहस्पतेऽअति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। बृहस्पतये नमः ॐ स्वाहा।। ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु।। शुक्राय नमः ॐ स्वाहा।।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।। शनैश्चराय नमः ॐ स्वाहा।।
ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूत्ती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया वृत्ता।। राहवे नमः ॐ स्वाहा।।
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः।। केतवे नमः ॐ स्वाहा।। इति नव ग्रहाणां होमः।।

ततो आचमनीयं जलमादाय—अनेन हवनेन सूर्यादिग्रहा प्रीयतम् नमम।।

अथाधिद्देवनानां होम

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॐ ईश्वराय नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च० ॐ उमायैनमः स्वाहा।।
ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानः० ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा।।
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो० ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।।
ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।
ॐ सजोषाइन्द्र सगणो० ॐइन्द्राय नमः स्वाहा ।।
ॐ यमायत्वा मखायत्वा० ॐ यमाय नमः स्वाहा।।
ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य० ॐ कालाय नमः स्वाहा।।
ॐ इन्धानास्त्वा० ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा।।

अथ प्रत्याधि देवता होम

ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्य० ॐ अग्नये नमः स्वाहा।।
ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान० ॐ अदभ्यः नमः स्वाहा।।
ॐ स्योना पृथिवी नो० ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें० ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।।
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र० ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।।
ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या० ॐ इन्द्राण्यै नमः स्वाहा।।
ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो० ॐ प्रजापतये स्वाहा।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।।
ॐ ब्रह्म जज्ञान प्रथमं० ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा।।

अथं पंञ्चलोकपाल देवता होम

ॐ गणानात्वा गणपति० ॐ गणपतये स्वाहा।।
ॐ अम्बेऽअम्बिके ऽम्बालिके० ॐ दुर्गायै स्वाहा।।
ॐ आनो नियुद्भिः० ॐ वायवे स्वाहा।।
ॐ घृत घृतपावानः पिवतः० ॐ आकाशायनमः स्वाहा।।
ॐ यावांकशा मधु० ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा।।

नवग्रह समिधा

अर्कः पलाशः खदिरो अपामार्गश्च पिप्पलः।
उदुम्वर शमीदूर्वाः कुशाश्च समिधोः नव।।

अथ दशदिक्पाल होम

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र० ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा।।
ॐ त्वन्नोअग्ने वरुणस्य० ॐ अग्नये स्वाहा।।
ॐ यमायत्वांगिरस्वते० ॐ यमाय स्वाहा।।
ॐ असुन्वन्तमयजमान० ॐनिर्ऋतये स्वाहा।।
ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा० ॐ वरुणाय स्वाहा।।
ॐ आ नो नियुद्भिः० ॐ वायवे स्वाहा।।
ॐ वय ँ सोम व्रते तव० ॐ कुवेराय स्वाहा।।
ॐ तमीशानञ्जगत० ॐ ईशानाय स्वाहा।।
ॐ अस्मे रुद्रा मेहना० ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० ॐ अनन्ताय स्वाहा।।

अथ वास्तुहोम

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ स्वाहा।।

नामावली से हवन करना होतो पूजा प्रकरण में वास्तु नामावली से करें। पृ० सं० ६८।।

षोडष स्तंभ हवनम्

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं० ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें० ॐ विष्णवे स्वाहा।।
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० ॐ रुद्राय स्वाहा।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार० ॐ इन्द्राय स्वाहा।।
ॐ चित्रं देवानां मुदगा० ॐ सूर्याय स्वाहा।।
ॐ गणानां त्वा० ॐ गणपतये स्वाहा।।
ॐ यमाय त्वा मखाय० ॐ यमाय स्वाहा।।
ॐ यदक्रन्दः प्रथमं० ॐ स्कन्दाय स्वाहा।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० ॐ अनन्ताय स्वाहा।।
ॐ वायुरग्रेगाः यज्ञ प्री.० ॐ वायवे स्वाहा।।
ॐ सोम ँ राजानमवसे० ॐ सोमाय स्वाहा।।
ॐ इमं में वरुण० ॐ वरुणाय स्वाहा।।
ॐ सुगावो देवाः सदना० ॐ वसवे स्वाहा।।
ॐ सोमो धेनु ँ सोमो० ॐ धनदाय स्वाहा ।।
ॐ बृहस्पतेऽअति० ॐ बृहस्पतये स्वाहा।।
ॐ विश्वकर्मन् हविषा० ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा।।

चतुर्वेद हवनम्

ॐ अग्निमीले पुरोहितं० ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा।।
ॐ इषेत्वोर्जे त्वावायव स्थ० ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा।।
ॐ अग्नआयाहि वीतये० सामवेदाय स्वाहा।।
ॐ शंन्नोदेवीरभिष्टय० ॐ अथर्वण वेदाय स्वाहा।।

चतु षष्टि योगिनी हवनम्

ॐ योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्र मूतये। ॐ स्वाहा।। नामावली हवन पूजन प्रकरण से करें। पृ० सं० ६।।

।।सर्वतोभद्र देवता हवनम्।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा।। ॐ स्वाहा।। नामावली हवन पूजन प्रकरण से करे।। पृ० सं० ११७।।

लिंगतो भद्रदेवता हवनम्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय, च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।। ॐ स्वाहा।। लिंगतो भद्र देवता नामावली हवन, पूजन प्रकरण से करे।। पृ० सं० ११६।।

अथ श्री यंत्रस्य देवता हवनम्

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाणं।। ॐ स्वाहा।। श्री यंत्रस्थ देवता नामावली हवन पूजा प्रकरण से करे।। पृ०सं० १२३।।

अथ क्षेत्रपाल हवनम्

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽए-तारमग्नेः।। एमेनम वृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। ॐ स्वाहा।। क्षेत्रपाल नामावली हवन पूजाप्रकरण से करे।। पृ० सं० ६३।।

रुद्र कलश हवनम्

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ॐ स्वाहा।। ततः जप पाठ दशांश हवनं कृत्वा प्रधान देवताहवनम्–

पुरुष सूक्त हवनम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ँसुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवेस्वाहा।। ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशागुंलम्।।१।। ॐ स्वाहा।। पुरुषऽएवेद ँसर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति रोहति ।।२।। ॐ स्वाहा।। एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।३।। ॐ स्वाहा।। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।।४।। ॐ स्वाहा।। ततोविराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथोपुरः।।५।। ॐ स्वाहा।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।६।। ॐ स्वाहा।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दा ँसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।७।। ॐ स्वाहा।। तस्मादश्वा ऽ अजायन्त ये के चोभयादतः।।गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽ अजावयः ।।८।। ॐ स्वाहा।। तंयज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऽऋषयश्च ये।।९।। ॐ स्वाहा यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं वाहू किमूरुर्पादाऽउच्येते।।१०।। ॐ

स्वाहा।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् व़ाहूराजन्यः कृतः। उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रोऽअजायतः।।११।। ॐ स्वाहा।। चन्द्रमां मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽ अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। ॐ स्वाहा।। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकाꣳरऽअकल्पयन्।।१३।। ॐ स्वाहा।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। ॐ स्वाहा।। ऊँ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअवध्नन् पुरुषं पशुम् ।।१५।। ॐ स्वाहा।। ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।१६।। ॐ स्वाहा।। विष्णुयाग मे हवनंविष्णुसहस्रनामावली से करे, विष्णुयाग में सोलह हजार आहुतियाँ होती हैं।

अथ रुद्र सूक्त हवनम्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐ स्वाहा।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। वाहुभ्यामुत ते नमः।।१।। ॐ स्वाहा।। या ते रुद्र शिवा तनूरधोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया

गिरिशन्तभि चाकशीहि।।२।। ॐ स्वाहा।। यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिँ सीः पुरुषं जगत् ।।३।। ॐ स्वाहा।। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमनाऽअसत्।।४।। ॐ स्वाहा।। अद्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भ्यन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।५।। ॐ स्वाहा।। असौयस्ताम्रो ऽअरुणऽउत वभ्रुः सुमंगलः। ये चैनँ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाँ हेडऽईमहे।।६।। ॐ स्वाहा।। असौ योऽवर्सपति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।७।। ॐ स्वहा।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽअस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।।८।। ॐ स्वाहा।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमु–भयोरात्न्र्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवःऽपरा ता भगवो वप।।९।। ॐ स्वाहा।। विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवाँ२ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।। ॐ स्वाहा।। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते वभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। ॐ स्वाहा।। परि ते धन्वनों हेतिरस्मान्वृण्क्तु विश्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारेऽ–अस्मन्निधेहि तम्।।१२।। ॐ स्वाहा।। अवतत्य धनुष्टवँ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां

मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। ॐ स्वाहा।। नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे उभाभ्यांमुतते नमो वाहुभ्यां तव धन्वने।।१४।। ॐ स्वाहा।। मानो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽ उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।।१५।। ॐ स्वाहा।। मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।१६।। ॐ स्वाहा।। लघुरुद्र या महारुद्र से यदि हवन करना हो तो रुद्राष्टाध्यायी से करे।

"अथ श्री सूक्त हवनम्"

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं मऽइषाण।। ॐ स्वाहा।। हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।। ॐ स्वाहा।। तांम ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। ॐ स्वाहा।। अश्वपूर्णारथमध्यां हस्तिनादप्रवोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये। श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। ॐ स्वाहा।। कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।४।।

ॐ स्वाहा।। चन्द्रां प्रभांसा यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।। ॐ स्वाहा।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः।।६।। ॐ स्वाहा।। अपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन कीर्तिमृद्धि ददातु में।।७।। ॐ स्वाहा। क्षुत्पिपासामलां जैष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वां निर्णुद में गृहात्।।८।। ॐ स्वाहा।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्ठां करीषिणीम्। इश्वरी सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। ॐ स्वाहा।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। ॐ स्वाहा।। कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम। श्रियं वासय में कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। ॐ स्वाहा।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस में गृहे। नि चदेवीं मातरं श्रियं वासय में कुले ।।१२।। ॐ स्वाहा।। आर्द्रांपुष्करिणीं पुष्टिं पिगंला पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१३।। ॐ स्वाहा आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं। सुवर्णां हेममलिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॐ स्वाहा।।१४।। ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्याऽश्

वान्विन्देय पुरुषानहम् ।।१५।। ॐ स्वाहा।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।।१६।। ॐ स्वाहा।।

शत् या सहस्र चंण्डि हवन करना हो तो दुर्गा सप्तशती से करे। शत चण्डि या सहस्रचंण्डी हवन में १०० या १००० आवृति होती है।

अथ उत्तर पूजनम्

ॐ तत्स० कृतस्य अमुक कर्मणः साङ्गत्वसिद्धये मृडनामाग्निसहित आवाहित देवतानां उत्तर पूजनं करिष्ये।

ॐ गणानान्त्वा गणपति० गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ॐकार, श्री स्वस्तिक देवताभ्यो नमः आ. स्था. पू.।

ॐ इमं में वरुण० वरुणाय नमः आ. स्था. पू.।

ॐ ग्रहाउर्जा० सूर्यादि नवग्रहादि देवताभ्यो नमः आ. स्था. पू.।

ॐ वास्तोस्पते० शिखिन्यादिवास्तु देवताभ्यो नमः आ. स्था.पू.।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं० ब्रह्मादि षोडश स्तंभ देवताभ्योनमः आ.स्था.पू.।

ॐ त्रातार मिन्द्र० इन्द्रादि दश दिग्पाल देवताभ्योनमः आ.स्था.पू.।.

ॐ अग्निमिले० ऋग्वेदादि चतुर्वेद देवताभ्यो नमः आ० स्था० पू०।।

ॐ योगेयोगेस्त० दिव्य योगादि चतुः षष्टि योगिन्ये

नमः आ० स्था० पू०।

ॐ इदं विष्णु० सर्वतो मद्रमण्डलोपरि आवाहित देवताभ्यो नमः आ० स्था० पू०।

ॐ नमः शम्भवा० लिंगतो भद्रोपरि आवाहित देवताभ्योनमः आ० स्था० पू०।

ॐ श्रीश्रचते लक्ष्मी० श्रीयन्त्रस्थ देवताभ्यो नमः आ० स्था० पू०।

ॐ इष्ट देवता कुल देवता ग्राम देवताभ्यो नमः आ० स्था० पू०।

ॐ नहिस्पशमवि० अजरादि क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

अथ अग्निपूजनम्

पूर्णाहुत्या मृडनाम अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अग्नि का पूजन कर नौ आहुति घी की दें।

ततः ब्रह्मणान्वारन्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न ममः। ॐ भुव स्वाहा इदं वायवे न ममः। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न ममः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य० इदमग्नि वरुणाभ्या०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो० इदमग्नि वरुणाभ्या०। ॐ आयाश्चाग्नेस्यनभिश० इदमग्नये न ममः। ॐ येते शतं वरुण यें सहस्रं० इदं वरुणाय सवित्रे

विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यश्च न०। ॐ उदुतमं वरुणं० इदं वरुणायादित्यायादितये न०।

अथ बलिदानम्

जलाक्षतान्यादाय—ॐ तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुक शर्म्मा (वर्म्मा गुप्तो) हं कृतस्य अमुक कर्मणः सांङ्गता—सिद्धर्थ आवाहितदेवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये। ततः दधि माष तण्डुल पत्रेषु संस्थाप्य तत्समीपें दीपञ्च संस्थाप्य—ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्य सांङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्य सशक्तिका अधिदेवता—प्रत्याधिदेवता—गणपत्यादिपञ्चलोकपाल सहिताः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्तिकर्तारः तुष्टिकर्तारः पुष्टिकर्तारों वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रहाः प्रीयन्ताम् नमम।। नवग्रह वेदी पर बलिदान दे देवें।

वास्तु वेद्यो परि आवाहित वास्तु देवताभ्यो नमः सांङ्गाय सपरिवाराय सायुधायः सशक्तिकायः इमं सदीपदधि भाष भक्तबलि समर्पयामि। भोवास्तुदेवताम्यो नमः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्ता क्षेम कर्तारशान्ति कर्तास्तुष्टिकर्ता पुष्टि कर्तावरदा

भवः।। अनेन बलिदानेन वास्तु देवता प्रीयन्ताम् योगिनीवेद्योपरि आवाहित चतुः षष्टि योगिनीभ्यः सांङ्गाय सपरिवाराभ्यः सायुधायः सशक्तिकायः इमं सदीप दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। इति जलमुत्सृजेत। भो–भो चतुः षष्टियोगिन्यः इमंबलि गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्य पुष्टिकात्र्यो वरदाभवः। अनेन बलिदानेन श्री चतुः षष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम्। ततः प्रधानदेवताभ्यो बलिदत्वा क्षेत्रपालाय महाबलिं दधात्।

एकस्मिन् पात्रे आहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा माषभक्तदध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा कुंकुम सिन्दूर कज्जलयुतं चतुर्मुख दीपं कृत्वा क्षेत्रपालाय नमः सम्पूज्य। प्रार्थयेत्–नमोवै क्षेत्रपालत्वं भूतप्रेतगणैः सह। पूजांवलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा।। ततो हस्ते साक्षतजलमादाय–क्षेत्रपाल महावाहो महावलपराक्रम। क्षेत्राणां रक्षणार्थाय वलिनय नमोस्तुते।। क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेत पिशाचडाकिनी शाकिनी वेतालादि सपरिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं चतुर्मुखं दीपदधिभाषभक्तवलिं समर्पयामि। इति जलमृत्सृज्य, प्रार्थयेत्– भो भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष वलिं भक्ष मम

सकुदुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्ति कर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता वरदो भव।। अनेन वलिदानेन श्री क्षेत्रपाल देवता प्रीयताम् न मम।

अथ पूर्णाहुति होम

श्रुवा के ऊपर नारियल रखकर संकल्प कर– फिर उसे अग्नि में डाले ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुक कर्माणि पूर्णतासिद्धये पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये। घृतपूरितनारिकेलोपरि सूत्रवेष्टितं संम्पूज्य। पूर्णाहुत्यै नमः इति पंञ्चोपचारैः सम्पूज्य श्रुवपात्रे संस्थाप्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।। कवि ँ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।। ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो स्वाहा।। नारिकेल– अग्नौप्रक्षिपेत्। ततः घृत धारांदद्यात् ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वाकाम धुक्षः स्वाहा। घृत धारा अग्नि में डाले। ततः त्र्यायुष करणम्– ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।। त्र्यायुषनिकाललेवे।

पूर्णापात्रदानम्– ॐ अद्यैत्यादिकृतै अमुककर्मण इदं तंण्डुलपूरितं पूर्णपात्रं सदक्षिणां प्रजापति दैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोचन कृत्वा प्रणीतोदकेने यजमान– शिरस्यभिषिच्य–ॐ सुमित्रिया न ऽ आपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। अथ वहिर्होमः। ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित मनसस्पतऽ इमं देव यज्ञँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।

अथ दशाश तर्पण मार्जन

पात्रस्थ जले जल देवतां सम्पूज्य होम दशाशेन मूल मंत्रेण अमुक देवतां तर्पयामि। इत्युक्त्वा तर्पणं कुर्यात्। ततः तर्पण दशांशेन मूलमंत्रेण अमुक देवतां मार्जयामि। जलेन यजमानमूर्धनि पृथिव्या वा मार्जनं कुर्यात्।।

अथ गोदानम्

ॐ अद्येहं अमुकगोत्रो अमुकराशी अमुक शर्म्माहं सपत्निकोहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये सकल मनोरथ सिद्धये श्रीयज्ञ पुरुष प्रीतये गोदानं करिष्ये। अथवा सवत्सायाः गोः यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये। आवाहनम्– आवाहयाम्यहं देवि गां त्वां त्रैलोक्य मातरम्।
यस्याः स्मरण मात्रेण सर्वपापै प्रमुच्यते।।

त्वं देवि त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती।
तृणानि भक्ष्यसे नित्यंममृतं स्त्रवसे प्रभो।
भूतप्रेतपिशाचाश्च पितृदैवतमानुषान्।।
सर्वातारयते देवि नरकात्पाप संकटात्।।
इत्यावाह्यपूजयेत्। सवत्सायै गवे नमः।

पाद्यं समर्ययामि। गोः अग्रपादाभ्यां नमः गोः पश्चात्पादाभ्या नमः, गोः श्रृगाभ्यानमः, गोः कर्णाभ्यानमः, गोः पृष्टाभ्यां नमः। गोपुच्छायनमः। गवे नमः पाद्य आचमनीयं स्नानीय जलं समर्पयामि वस्त्रं समर्पयामि चन्दनं समर्पयामि पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।

गोदान संकल्प

ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रो अमुक राशि अमुक शर्माहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये सकल मनोरथ सिद्धये श्री यज्ञ पुरुष प्रीतये गोदान प्रतिष्ठा सहितं ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

।। अथ आशीर्वाद मन्त्रः।।

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।। पयः पृथिव्या पय ऽओषधीषुपयो

दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम।। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता वृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवता वरुणो देवता। ॐ द्योः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि पराशुव। यदभद्रंतन्नऽआसुव।। श्री वर्चस्व–मायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते। धान्यं धनं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

मन्त्रार्था सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणां उदयस्तव।।

प्रधान कलश से जल के छीटे देकर ब्राह्मण श्री फल पुष्प आदि यजमान को देवें।

।। अथ जपार्थ ग्रहा मन्त्राः।।

रविः– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः जपसंख्या ७०००

चन्द्रः– ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः ११०००

भौमः– ॐ क्रां क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः १००००
बुधः– ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ६०००
गुरुः– ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः १६०००
शुक्रः ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः १६०००
शनि ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः २३०००
राहुः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः राहवे नमः १८०००
केतुः ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः १८०००
मुन्था का जप मुन्थेश के समान होगा।

महामृत्युञ्जयमंत्र– ॐ हौं ॐ जूँ ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूँ ॐ हौं ॐ।।

जप संख्या १२५०००

अथ सन्तानगोपाल मंत्र–ॐक्लीं श्री ह्रींजीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते। देहि में तनयं कृष्णं त्वामहं शरणंगतः।। ॐ स्व भुवः भूः ॐ जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ।।

जप संख्या १२५०००

गणेशषडक्षर मंत्र– ॐ वक्रतुण्डाय हुँ।। जप संख्या जितना हो सके

शिव पञ्चाक्षर मंत्र– ॐ नमः शिवाय।।
विष्णोर्द्वादशाक्षर मंत्र– ॐ नमों भगवते वासुदेवाय।।
दुर्गा मंत्र– ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चै।।
अश्विनी नक्षत्र मंत्र– ॐ अश्विना तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो वलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः।। जप संख्या ५०००
मृगशीर्ष मंत्र– ॐ इमन्देवाअसपत्न ँ सुवध्वं०।। ज.सं.१००००
अश्लेषा मंत्र– ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च० ।। ज०सं० ५०००
मूल मंत्र– ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमग्नि ँ स्वे योनावभारुरवा। तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु।।
जप संख्या ५०००

आरती

पूजन जप या यज्ञ के उपरान्त त्रुटि की पूर्ति हेतु आरती की जाती है मंत्र क्रिया के हीन होने पर भी आरती करनें या देखनें मात्र से पूर्णता होती है।

वेदोक्त आरती

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाँ सि वृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।१।।

ॐ इदँ हविः प्रजननं में ऽअस्तु दशवीरँ सर्वगणँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासु धत।।

।। सर्वरुप भगवान जगदीश्वर की आरती।।

ॐ जय जगदीश हरे स्वमिजय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।।ॐ।।
जो ध्यावैं फल पावै, दुख बिन से मन का। प्रभु
सुख–सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का ।।ॐ।।
मात–पिता तुम मेंरे, शरण पड़ू किसकी । प्रभु
तुम बिन और न दूजा, आश करुँ किसकी।। ॐ।।
तुम पूरन परमात्मा तुम अन्तर्यामी। प्रभु
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।।ॐ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन–कर्त्ता।।प्रभु
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता।।ॐ।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।।प्रभु
किस विधि मिलूं दयामय, तुम से मैं कुमति ।।ॐ।।
दीनबन्धु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।।प्रभु।
अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे।।ॐ।।
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।।प्रभु

श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।ॐ।।

।। भगवान ब्रह्मा विष्णु महेश की आरती ।।

ॐ जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्द्धंगी धारा।।
ॐ हर – हर – हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।।शिव।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै।।ॐ।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज तुम सोहै।शिव।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै ।।ॐ।।
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।शिव।
चन्दन मृगमदलेपन भाले शशिधारी।।ॐ।।
श्वेताम्बर पीताम्बर वाघाम्बर अंगे ।शिव।
सनकादिक ब्रह्मदिक भूतादिक संगे।।ॐ।।
करमध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता ।शिव।
जग करता जग भर्त्ता जगपालन करता ।।ॐ।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।शिव।
ॐ अक्षर के मध्यै तुम तीनों एका।।ॐ।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै । शिव।

भनत शिवानन्द स्वामी मनवांच्छित पावै।।ॐ।।

।। आरती श्री अम्बे मैया की।।

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय मंगल मुरती, मैया जय आनन्द करनी
तुम को निसदिन सेवत ब्रह्मा हरि शिवरी ।। ॐ जय अम्बे।।
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को। मैया।
उज्ज्वल से दो नयना चन्द्रवदनीको।। ॐ।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।। मैया।
रक्त पुष्प गल माला, कंठन पर साजै।।ॐ।।
केहरि वाहन राजत खड्गखप्पर धारी। मैया।
सुरनर–मुनिजन सेवत तिनके दुख हारी।। ॐ।।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ।। मैया।।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती।। ॐ।।
शुम्भ–निशुम्भ विदारे महिशासुर घाती। मैया।
धूम्रविलोचन नयना निशदिन मदमाती।। ॐ।।
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।। मैया।
मधु–कैटभ दोऊ मारे, सुरभय हीन करे।। ॐ।।
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी तुम कमला रानी। मैया

गृहे जप समं विधात् गोष्ठे शत गुणं भवेत्।
नद्या शत सहस्रांस्याद् अननतं शिव सन्निधौ।। *(ईश्वरः)*

आगम निगम बखानी, मुम शिव पटरानीं।। ॐ।।
चौसठ योगिनि गावत नृत्य करत भैरूं। मैया।
बाजत ताल मृदंगा, शंख बाजत डमरु।। ॐ
तुम ही जग की माता तुम ही हो भर्त्ता। मैया
भक्तन की दुख हर्त्ता, सुख सम्पत्ति दाता।ॐ।।
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी ।।मैया।।
मनवांच्छित फल पावत सेवत नर नारी।।ॐ।।
कंञ्चन थाल विराजत अगर कपूर वाती।मैया
श्री माल केतु में राजत कोटिरत्न ज्योति।।ॐ।।
अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।मैया।।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवाच्छिंत फल पावै।।ॐ।।

।। पुष्पाञ्जलि ।।

ऊँ यज्ञेन यज्ञमनयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्य सन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। ऊँ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो बयंवैश्रवणाय कुर्महे। समेकामान कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ऊँ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषऽ आन्तादापरार्धत्पृथिव्यै

समुद्रपर्यन्ताया;ऽएकराडिति। तदप्येषु श्लोको ऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामाप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति।। ॐ व्विश्वत श्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्पात्। सं वाहुभ्यां धमति सं पतत्रैद्यावाभूमी जनयन्देव ऽ एकः। ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहिः। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्। ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्त्र तुण्डाय धीमहि। तन्नो गणपतिप्रचोदयात्।। ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।। नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।। ॐ महालक्ष्मिश्च विद्महे सर्वशक्तिश्च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।। ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालो भवानिच।। पुष्पाञ्जलि मयादत्त गृहाणं परमेश्वरः (परमेश्वरी)।। पुष्पाञ्जलि भगवान पर चढ़ाकर परिक्रमा कर दवे।। ये तीर्थानि प्रचरति सृकाहस्ता निषङ्गिणः तेषाँ सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। यानिकानि च पापानि जन्म जन्म कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदाक्षिण पदे–पदे।।

विसर्जन प्रार्थना

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणा देव तद्विष्णोः स्मपूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतो यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

यज्ञ पुरुष भगवान की जय। सत्य सनातन धर्म की–जय।। कृष्ण चन्द्र भगवान की जय।। शंकर भगवान की जय।। जगदम्बा मैया की जय।। गंगा मैया की–जय।। धर्म का जय हो। अधर्म का नाश हो।। प्राणियों में–सद्भावना रहे।। विश्व का–कल्याण हो।। गौमाता की जै।। भारत माता की–जय।। भारत की देवियो की– जय।। सन्त समाज की– जय। गंगे हर हर ।। बजरंग बलि की–जय।।

"चरणामृत लेने का का मन्त्र"– ॐ अकाल मृत्यु हरणं सर्व दुखः विनाशनम्। विष्णो पादोदकं पित्वा शिरसा धारयाम्यहम्।।

।। अथ संकष्ट नाशन गणेश स्तोत्रम्।।

श्री गणेशाय नमः

नारदो उवाच–प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ शिद्धये।।१।।
प्रथमं वक्रतुण्डंच एकदन्तं द्वितीयकम ।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्र चतुर्थकम्।।२।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्ण तथाष्टमम्।।३।।
नवमं भालचन्द्र च दशमं तु विनायकम्।।
एकादशं गणपतिं च द्वादशं तु गजाननंम्।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य पठेन्नरः।
न च विघ्न भयं तस्य सर्व सिद्धिकरः प्रभो।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्या धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रांन्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।
जपेत् गणपति स्तोत्रं षड़भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।

।। इति श्री नारद पुराणे संकष्ट नाशनं नाम गणेशस्तोत्रं संम्पूर्णम्।।

अच्युताष्टकम्

श्री गणेशाय नमः। अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।। श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।१।। अच्युतं केशवं सत्यभामाघवं माधवं श्रीधरं राधिकाऽराधितम्।। इन्दिरामंन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकी नन्दनं नंदजं सदधे।।२।। विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे रुक्मिणीरागिणे जानकी जानये। वल्लवी वल्लभायार्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः।।३।। कृष्ण गोविन्द हे रामनारायण श्रीपते

वासुदेवाजितं श्रीनिधे। अच्युतानन्त हे माधवा धोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक।।४।। राक्षसं क्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभू पुण्यताकारण।। लक्ष्मणे नान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसंपूजितो राघवः पातुमाम्।।५।। धेनुकारिष्टकाऽनिष्टकृद्द्वेषिणां केशिहा कंशहृद्वंशिका वादकः।। पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो वालगोपालकः पातु मां सर्वदा ।।६।। विद्युध्योतवान्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडभोदवप्रोल्लसद्वि-ग्रहम्।। वन्यया मालया शोभितोरः स्थलं लोहितांध्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।७।। कुंचितैः कुंतलैभ्राजमानाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गंडयो।। हारके यूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं किंकिणी मंजुलं श्यामलं तं भजे।।८।। अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्। वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वंभरं तस्य वश्योहरिर्जायते सत्वरम्।।६।। इति शंकराचार्य-विरचितमच्युताष्टकं सम्पूर्णम्।।

विष्णोरष्टाविंशातिनामस्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः।। अर्जुन उवाच। किं नु नाम सहस्राणि जपते च पुनःपुनः यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशवः।।१।। श्री भगवानुवाच—मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम् गोविन्दं पुडरीकाक्षं माधवं मधु सूदनम् ।।२।। पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालि हलायुधम्। गोवर्धनं हृषीकेशं बैकुंठ पुरुषोत्तमम्।।३।।

विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्। दामोदरं श्रीधरं च वेदांग गरुडध्वजम्।।४। अनंतं कृष्णगोपालं जपतो नास्तिपातकम् । गवांकोटि प्रदानस्य अश्वमेध शतस्यच ।।५।। कन्यादानं सहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः। अमाया वा पौर्णमास्यामेकादश्यांतथैव च।।६।। संध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च। मध्याहने च जपन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।७।।

इति श्री कृष्णार्जुन संवादे विष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रं संपूर्णम्।।

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि

श्री गणेशायनमः।। सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोंकारम् ममलेश्वरम्।।१।। परल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्। सेतुवन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।।२।। वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे। हिमालयेतु केदारं धुसृणेशं शिवालये।।३।। एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायंप्रातः पठेन्नरः सप्तजन्मकृतंपापं स्मरणेन विनश्यति।।

।इति द्वादश ज्योर्तिलिंगानि।

।। अथ विश्वनाथाष्टकम्।।

आदिशंभुस्वरूप मुनिवरचन्द्रशीशजटाधरम्।
मुण्डमाल विशाल लोचन वाहंन वृषभध्वजम्।।

नागचर्म त्रिशूल डमरू भस्मअंगनिहंडमम्।
श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्।।१।।
गंग संग प्रसंग सरिता कामदेव सुसेवितम्।
नाद विन्दु संयोगसाधन पंञ्चवक्त्रत्रिलोचनम्।।
इन्दुविराज शशिधर सेवितं सुरवदितम्।
श्रीनीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेरवरम्।।२।।
ज्योर्तिलिंङ्गसुलिङ्गफणिमणिदिव्यदेवसुसेवितम्।
मालती तनु पुष्प माला गन्ध धूप निवेदितम्।।
अनलकुंभ सुकुभ झलकत कलशकंचनशोभितम्।
श्री नीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्।।३।।
मुकुटक्रीट सुकनककुण्डल मंण्डितं मुनिरंजितम्।
हारमुक्ता कनकरेखा रेखितं सुविषेशितम्।।
गन्धमादन शैल आासन आसनंसुप्रकाशनम्।
श्री नीलकंष्ठ हिमालजलधर विश्वनाथविश्वेश्वरम्।।४।।
मेघडम्बरक्षत्रधारण चरन कमल रसातलम्।
पुष्परथपर मदन मूर्तिगौरिसंग सदाशिवम्।।
क्षेत्रपाल सुपाल भैरव कुशुभ नवग्रह भूषितम्।
श्री नीलकंण्ठहिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्।।५।।
त्रिपुर दैत्य सुदैत्यदानवप्राप्यते फलदायकम्।
रावणादशकमलमस्तक अङ्गजलवर सायकम्।।
श्री रामचन्द्र सुचन्द्ररधुवर सेतुबन्ध निवासितम्।
श्री नीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्।।६।।
मथितदधिजल शेषविगलित भ्रमतमेरु सुमेरुकम्।

स्तवत्‌विगलित दीपप्रणवत युग्मनेत्र सुनेत्रकम्।।
महादेव सुदेवसुरपति सर्वदेव विश्वम्भरम्।
श्रीनीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्।।७।।
रुद्ररूप सुतेजन कृत भक्षमान हलाहलम्।
गगनवेधित अखिलधारा आदि अन्तसमाहितम्।।
कामकुंज्जर मानकेशव महाकालविश्वेश्वरम्।
श्रीनीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेरवरम्।।८।।
ऋतु वसन्त सुचक्रचौदश प्राप्यते फलदायकम्।
पूर्वकाशी भयेवासो मनुज मंगलदायकम्।।
अम्बिकेतट वैधनाथं शैलशिखर महेश्वरम्।
श्रीनीलकंण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथविश्वेश्वरम्।।६।।

।। शुभम्।।

महालक्ष्म्यष्टकम्

इन्द्र उवाच– नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। १।।
नमस्ते गरुडारुढ़े कोलासुर भयंकरि।
सर्वपाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। २।।
सर्वज्ञे सर्व वर दे सर्व दुष्टभयंकरि।
सर्वदुःख हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।। ३।।
सिद्धिबुद्धिप्रदेदेवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदादेवि महालक्ष्मिनमोऽस्तुते।। ४।।
आद्यंत रहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योग संभूते महालक्ष्मिनमोऽस्तुते।। ५।।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मिनमोऽस्तुते।। ६।।
पद्मासन स्थिते देवि परब्रह्मस्वरुपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।७।।
श्वेताम्बर धरेदेवि नानालंकार भूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।८।।
महालक्ष्याष्टकंस्तोत्रं यः पठेदभक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिं मवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।।९।
एककालं पठेनित्यं महापाप विनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितम्।।१०।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम्।
महालक्ष्मिर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।११।।

इति इन्द्रकृतः श्री महालक्ष्यष्टकस्तवः सम्पूर्णम्।।

।। दशहरा गंगा स्तुतिः।।

ब्रह्मोवाच—नम्रः शिवायै गंगायै शिवदाये नमों नमः।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांक्यैते नमो नमः।।१।।
नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्तै नमों नमः।
सर्व देवस्वरूपिण्यै नमों भेषज मूर्तये।।२।।
सर्वस्य सर्व व्याधिनां भिषक् श्रेष्ठ्ये नमोऽस्तुते।
स्थाणुजंगमसंभूतविषहंत्र्यै नमो नमः।।३।।
भोगोपभोग दायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः।
मन्दाकिन्यै नमस्तेस्तु स्वर्गदायै नमो नमः।।४।।
नमस्त्रैलोक्य भूषायै जगद्धात्र्यै नमो नमः।

नमस्तेशुक्ल संस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः।।५।।
नन्दायै लिंगधारिण्यै नारायण्यै नमोनमः।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमों नमः।।६।।
वृहत्यै ते नमस्तेस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्व गीत्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः।।७।।
पृथ्व्यै शिवाभृतायै च सुवृषायै नमो नमः।
शातायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः।।८।।
उस्त्रायै सुखदोग्ध्र्यै च संजीविन्यै नमो नमः।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्नै नमो नमः।।६।।
प्रणतार्तिप्रभंजिन्यै जगन्मात्र्यै नमोस्तुते।
सर्वात्प्रतिपक्षायै मंगलायै नमो नमः।।१०।।
शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।११।।
निर्लेपायै दुर्गहत्र्यै दक्षायै ते नमो नमः।
परात्परतरे नमस्तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा।।१२।।
गंगे ममाग्रतो भूया गंगे में देवि पृष्ठतः।
गंगे में पार्श्वयोरेहि त्वयि गंगेस्तु मे स्थितिः।।१३।।
आदौ त्वंमंते मध्ये च सर्व त्वं गां गते शिवे।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं ही नारायणः परः।।१४।।
गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ।।१५।।
य इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोपि यः।
श्रुणुयाच्छुद्धया युक्तः कायवाक्चित संभवै।।१६।।
दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते।
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते।।१७।।
ज्येष्टे मासे सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।

तस्यादशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः।।१८।।
यपठेद्दश कृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः।
सोऽपि तत्फल माप्नोति गंगा संम्पूज्य यत्ननः।।१९।।
अदत्ताना मुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम्।।२०।।
पारुष्यंमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असंबद्ध प्रलापश्च वाङमयं स्यच्चतुर्विधम्।।२१।।
परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्।
वितथोभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधस्मृतम्।।२२।।
एतानि दश पापानि हर त्वं मम जान्हवि।
दशपाप हरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।।२३।।
त्रयस्त्रिंशच्छतं पूर्वान् पितृनथपितामहान्।
उद्धरत्येव संसारान्मत्रेणानेन पूजिता।।२४।।
नमो भगवत्यै दशपाप हरायै गंगायै नारायण्ये रैवत्यै शिवायै
दक्षाये अमृतायै विश्वरूपिण्यै नदिन्यै ते नमो नमः।।२५।।
सितमकरनिष्णा शुभ्रवर्णा त्रिनेत्रां करधृत
कलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्। विधि हरि हर रुपां
सेंदुकोटीरजुष्टां कलि तसित दुकूलां जाहनवीं तां
नमामि।।२६।। आदावादिपितामहस्य निगमव्यापार
पात्रे जलं पश्चात्पन्न्गशायिनो भगवतः पादोदकं
पावनम्।। भूयः शम्भु जटा विभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरिय।
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते।।२७।।
गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते
सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।।२८।।

।। दशहरा गंगा स्तुतिः सम्पूर्णम्।।

।। श्री बद्रीनाथ स्तुति ।।

पवन मन्द सुगन्ध शीतल, हेममन्दिर शोभितम्।
निकट गंगा वहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।१।।
शेष सुमिरन करन निशि दिन, धरत ध्यान महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।२।।
इन्द्र चन्द्र कुवेर दिनकर, धूप दीप निवेदितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।३।।
शक्ति गौरि गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम्।
योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।४।।
यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितम्।
श्री लक्ष्मी मैया चंवर डोले, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।५।।
कैलास में एक देव निरंजन, शैलशिखर महेश्वरम्।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।।६।।
श्री बद्रीनाथ की परम स्तुति, पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ भवेत् पुण्यं, प्राप्यते फल दायकम्।।७।।

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मंत्र नो यंत्र तदपि च न जाने स्तुतिमहो।
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति–कथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं।
परंजाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेश हरणम्।।१।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाश– क्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।२।।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि वहवः सन्तिसरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे।
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।३।।
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।४।।
परित्यक्त्वा देवा विविधविध सेवाकुलतया
मयापञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता।
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।।
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रको विहरति चिरं कोटि कनकै।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधौ।।६।।
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कंण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।७।।
नमोक्षस्यकाक्षांभवविभववाच्छापि च नमे
न विज्ञानापेक्षा शशि मुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातुमम वै

मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।।८।।
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः।
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृत वचोभिः
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्बपरं तवैव ।।६।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।।
जगदंम्ब! विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।११।।
मत्समः पातकी नास्तिपापहनी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।।१२।।

इति श्री शंकराचार्य विरचितं देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ नवनाग स्तोत्रम्

अनंन्तं वासुकि शेषं पद्मनाभं च कंवलम्।
शंखपालं घृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।१।।
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
सायकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत।।२।।

।।इति श्री नवनाग स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।१।।
दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं सोमंशंभोर्मुकुटभूषणम्।।२।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युतकांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाभ्यहम्।।३।।
प्रियंगु कालिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।४।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुकाञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकस्य तं नमामि बृहस्पतिम्।।५।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।६।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छाया मार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।७।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहु प्रणमाम्यहम्।।८।।
पलाश पुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाभ्यहम्।।६।।
इतिव्यासमुखोदगीतं यः पठेत्सुत्समाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्न शांतितर्भविष्यति।।१०।।
नरनारीनृपाणां च भवेदुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषां मारोग्यं पुष्ठिवर्धनम्।।११।।

ग्रह नक्षत्रजाः पीडातस्कराग्निसमुदभवाः।
ताः सर्वा प्रशमं यांति व्यासोब्रूते न संशयः।।१२।।
इति श्री व्यासविरचितं नवग्रह स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ शनिस्तोत्रम्

दशरथ उवाच

कोणोंतको रौद्रयमोऽथ वभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमंदसौरिः।
नित्यंस्मृतो यो हरते च पीड़ां तस्मै नमःश्रीरविनन्दनाय ।।१।।
सूरासुरा किंपुरुषारगेंन्द्रा गंधर्व विधाधर पन्नगाश्च।
पीड्यंन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।२।।
नरानरेन्द्राः पशवो मृगेंद्रा वन्याश्चयै कीट पतंग भृगाः।
पीड्यंन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमःश्री रविनन्दनाय ।।३।।
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पींड्यंन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मैं नमः श्री रविनन्दनाय।।४।।
तिलैर्यवैमाषगुडान्नदानैलौहेन नीलाम्बरदानतोवा।
प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय।।५।।
प्रयागकूले यमुनातटे वा सरस्वती पुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।६।।
अन्यप्रदेशात्स्व गृहं प्रविष्ठ स्तदीयवारे सनरः सुखीस्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्री रविनन्दनाय।।७।।
स्रष्टा स्वयं भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।८।।
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुवाधवैश्च।

पठेतु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदंतै।।६।।
कोणस्थः पिंगलो वभ्रुः कृष्णोरौद्रोंऽतको यमः।
सौरिः शनैश्चरः मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः।।१०।।
एतानि दशनामानि प्रातरुस्थाय यः पठेत्।
शनैश्चर कृतापीड़ा न कदाचित् भविष्यति।।११।।

इति शनैश्चर स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्री राम स्तवनम्।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमें।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।
श्री राम राम रघुनन्दन राम राम।
श्री राम राम भरताग्रज राम राम।।
श्री राम राम रण कर्कश राम राम।
श्री राम राम शरणं भव राम राम।।

श्री राम चन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि, श्री राम चन्द्र चरणौ वचसा गृणामि। श्री राम चन्द्र चरणौ शिरशा नमामि, श्री राम चन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये।।

'भाष्कर प्रयाग महात्म्य'

स्कंद पुराण के केदार खंण्डान्र्तगत भाष्कर प्रयाग, जिसको अव भटवाडी के नाम से जाना जाता है का दर्शन मात्र से प्राणियों की सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होती है अतः भाष्कर प्रयाग के दर्शन कर पुण्य अर्जित करें।

स्कन्द उवाच

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि भाष्करं क्षेत्रमुतमम्।
ततो वै दक्षिणे भागे गव्यूतिपरिनिष्ठितम्।।१।।
पुरा तत्र महादेवः संस्तुतः परमेश्वरः।
भाष्करेण महाभाग दिव्यवर्ष सहस्रकम्।।२।।
सन्तुष्टश्च तदा तस्मै ददौ नेत्रस्थितिं मुने।
गंगाया पश्चिमें तीरे तीर्थं पाप प्रणाशनम्।।३।।
तत्रैव भाष्करं कुण्डं यत्र वै स्नान मात्रतः।
रवि लोकं मुने गत्वा ततः शिव पुरे वसेत्।।४।।
इदं वै भाष्करं क्षेत्रं शिवस्थानं स्मृतं परं।
नाम्ना तत्र महादेवो विप्रर्षे भाष्करेश्वरः।।५।।
पूजयित्वा विधानेन शत रुद्रियकेन वै
प्राप्नोति परम स्थानं महाराजस्ततो भवेत्।।६।।
ततो वै दक्षिणे भागे विष्णु कुण्डमिति स्मृतम्।
तत्र स्नाननरायाति वैकुण्ठं स्थानमच्युतम्।।७।।
तत्रैव दंण्ड षष्टे वै ब्रह्म कुण्डमिति स्मृतम्।
स्नान मात्रेण तत्रापि ब्रह्मलोके महीयते।।८।।
ततो दक्षिण के भागे नवला च नदी स्मृता।
सूर्य लोक मवाप्नोति तस्यां यः स्नाननाचरेत्।।९।।
इदं परम संस्थानं महादेवस्य नारदः।
एतन्न त्यजतेविप्र चरमेपि युगे शिवः।।१०।।
यत्र स्नाना तथा दाना तथा मंत्र जपान्मुनें।
अधिकं पुण्यंमवाप्नोति क्षेत्रादेव प्रयागतः।।११।।

'इति'

लेखक की प्रार्थना

ॐ व्विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि
परासुव।। यद्भद्रन्तन्नऽआसुव।।

हे सवितादेव हमारे पापों को दूर करो और जो
कल्याण है सो हमको प्रदान करो।।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।।

सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्रादि शान्ति रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में गणपति पूजन के साथ नवग्रहों की शान्ति, नौ ग्रह पूजन, ग्रहों के मंत्र, ग्रहों के स्तोत्र, अष्ट योगिनी पूजन व मंत्र, शिव पार्थिव पूजन, महामृत्युंजय कवच, महामृत्युजंय जप के मंत्र, संतान गोपाल मंत्र, बाल रक्षा स्तोत्र, नाग पूजन। २७ नक्षत्रों के पूजन मंत्रके साथ गण्डमूल अभुक्तमूल नक्षत्र, मूल शान्ति प्रयोग, ज्येष्ठा शान्ति प्रयोग, आश्लेषा शान्ति, कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति, त्रिकप्रसव शान्ति, ग्रहण जनन शांति, वास्तु विधान, गृह वास्तु पूजन, नृसिंह पूजन, गायत्री, जप के बाद की सचित्र आठ मुद्राएं, चौबीस गायत्री, शताक्षर गायत्री मंत्र के साथ पितृ तर्पण प्रयोग को विस्तृत ढंग से दिया गया है। यह पुस्तक सब लोगों के लिये उपयोगी है। मूल्य 60 रु०।

सम्पूर्ण हवन रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में पंचगव्य निर्माण, आचार्यवरण, रक्षा विधान, यज्ञकुण्ड पूजन, पंचभू संस्कार, अग्नि पूजन, हवन संकल्प, पंच वारुण होम, नवग्रह होम, अधिप्रत्याधि, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल होम, वास्तु होम, सोडश स्तंभ होम, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, योगिनी, क्षेत्रपाल, विष्णुयाग (विष्णु सहस्त्रनाम), गायत्री याग (गायत्री सहस्त्रनाम), रुद्रयाग (रुद्रिपाठ सहित), दुर्गा याग (याग विधान), पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त, श्रीसूक्त, हवन तथा न्यास सहित, उत्तर पूजन, स्विष्ट कृद्धोम, बलिदान, पूर्णाहूति, आरती, तर्पण, मार्जन, गोदान, अभिषेक मंत्र तथा देवताओं के विसर्जन मंत्र सहित यज्ञकुण्ड निर्माण की विधि रंगीन भद्रमण्डल चक्र के साथ सुसज्जित पुस्तक प्रत्येक ब्राह्मण, साधक, धार्मिक मनुष्य के लिये परम उपयोगी है। इस पुस्तक को आज ही मंगाये। मूल्य 80/-रु०

पता-कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार। फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh